रंगीला रसूल

(हजरत मोहम्मद साहब का जीवन चरित्र)

लेखक :–

पं० चमूपति एम० ए०

प्रकाशक :–

मौहम्मद रफी

शहीदे आज़म महाशय राजपाल

लाहौर – भारत

दो शब्दः

आज के दौर में कई नए रिसर्चो से दो बातें साफ हो चुकी है, पहली – या तो इसा का जन्म हुआ ही नहीं था (उस दौर के एक सौ पचास से ज्यादा इतिहासकारों के किसी भी लेख में इसा का कोई उल्लेख नहीं है), दो–चार इतिहासकार के लेख में एक–दो लाईन से ज्यादा कुछ नहीं लिखा गया है और ये साबित भी हो गया है कि उन ऐतिहासिक लेखों में छेड़–छाड़ कर कुछ वाक्यों को डाला गया है। ये सचमुच बड़ी हैरत की बात है जैसा कि बाईबिल में इसा के कई करामात का उल्लेख है. अब तो युरोपीय देशों में ऐसी कई ग्रुप हैं, जो इसाई धर्म को छोड़ रही हैं, और दूसरी थ्योरी यह है कि अगर इसा (जेहोवा) नाम का कोई आदमी हुआ था, तो वह भारत जरूर आया था. इस बात के प्रमाण भी दिये जाते हैं, ऐसा माना जाता है कि इसा जम्मू कश्मीर के "पहलगाम" नामक स्थान पर आ कर काफी समय तक रहे थे. साथ ही इसा के जन्म के बाद से उसके युवावस्था तक के बारे में बाईबिल में कोई चर्चा नहीं है। बाईबिल में उसे एकाएक एकदम से प्रकट कर दिया गया है। वैसे भी अगर सचमुच इसा (जेहोवा) हुवा था, तो भी उसकी मृत्यु के करीब दो–ढाई सौ साल बाद बाईबिल लिखा गया। इस बात को कोई भी साधारण व्यक्ति आसानी से समझ सकता है कि किसी की मौत के दो सौ पचास साल बाद उसके बारे में अक्षरशः लिखना शायद ही सम्भव हो, खासकर तब, जब उसके समकालीन डेढ सौ से ज्यादा इतिहासकारों को उसके बारे में कोई पता ही न रहे। ऐसे में कहा जा सकता है कि इसाइयों की पवित्र पुस्तक एक मनगढंत रचना है. खैर जो भी हो, इस बारे में सविस्तार पूर्वक अपने दूसरे आलेख मे लिखने का प्रयास करूंगा।
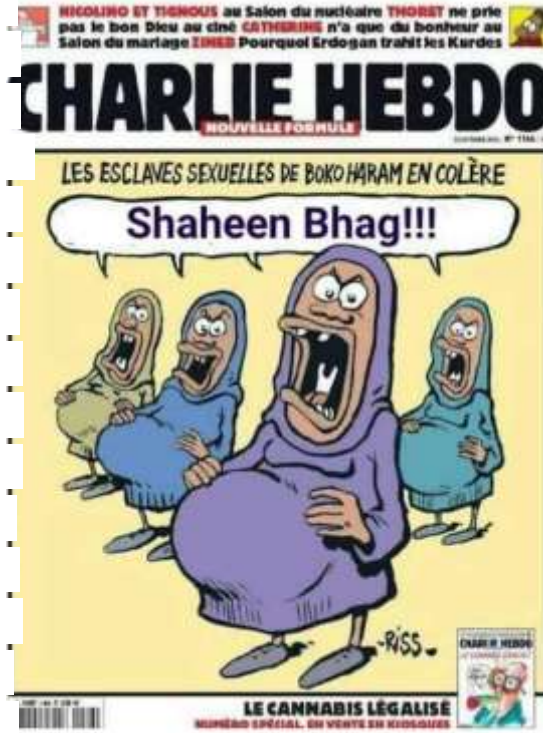
आज के समय में जबकि देश में राष्ट्रविरोधी और अलगाववादी ताकतें अपनी चरम बिंदू पर हैं, और हिन्दु सामाज की माताओं, बहनों को लव जेहाद का न सिर्फ

निशाना बनाया जा रहा है, बल्कि जबरन उनका धर्मान्तरण भी कराया जा रहा है, और विरोध करने पर परिवार के बाकी पुरूष सदस्यों और दोस्तों के साथ मिलकर बलात्कार कर बेरहमी से उनका कत्ल भी किया जा रहा है, यही नहीं पकड़े जाने पर कुछ पॉलिटिकल पार्टियों का समर्थन भी उन्हें मिलता है और साथ ही वो अपनी जातिगत और धार्मिक विक्टिम कार्ड खेलने से बाज़ भी नहीं आते. साथ ही गैर चुस्लिम पुरूषों को टार्गेट कर हत्या करना **"Mob Lynching"** एवं गैर चुस्लिम समुदाय के लोगों को मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से वैश्विक षडयंत्र के तहत खत्म करने की साजिश हो रही है.

जिस तरह चुस्लाम में बुर्का प्रथा है (सिर्फ घर के बाहर अपना चेहरा छुपाने के लिये, लेकिन घर के अन्दर हर तरह की छूट दी गई है), उसी प्रकार इस पंथ की कारगुजारियों पर भी पर्दा पड़ा हुआ था. लेकिन इनके वैश्विक कारगुज़ारियों के कारण न सिर्फ इस पंथ के कुछ लोगों ने अपनी आवाज़ बुलंद की (तस्लीमा नसरीन– जिन्होंने ''लज्जा'' पुस्तक में अयोध्या में 6 दिसम्बर 1992 में बाबरी ढांचे को गिराये जाने के बाद बांग्लादेश में हुए एकतरफा हिंसा में हजारों मंदिरों के गिराये जाने, असंख्य हिन्दु माताओं–बहनों के बलात्कार और हत्या, हिन्दु घरों–दूकानों की लूट एवं आगजनी एवं हिन्दु पुरूषों की बर्बतापूर्वक हत्या का अक्षरशः जिक्र किया और इस पंथ का वीभत्स चेहरा दुनिया के सामने लाया, वहीं दूसरी ओर सल्मान रूश्दी न **"The Satanic Verses"** यानी ''शैतानी आयतें'' नामक पुस्तक में उस क्रूर और बलात्कारी आदमी की कारगुजारियों को सही ठहराने वाले उन शैतानी आयतों के बारे में लिखा और दोनों लेखकों को अपनी जान की सलामती के लिये शायद आजीवन निर्वासित जीवन बिताना पड़े), बल्कि पिछले दस–बीस वर्षों में इस पंथ को जानने और इनके कृयाकलाप को समझने की होड़ सी हो गई है और इसी कारण वैश्विक रूप से लोग जानकारियां जुटा रहे हैं. अभी हाल ही में ''अली सीना'' द्वारा लिखित पुस्तक ''अंडरस्टैंडिंग मुहम्मद'' जो अमेरिका में प्रकाशित हुआ है, काफी लोकप्रिय हुआ है, और यह पुस्तक पूर्णतः तथ्यों पर आधारित है, खास बात यह है कि इसे भी एक मुस्लिम ने ही लिखा है। अभी हाल ही में पाकिस्तान के रहने वाले मुहम्मद हिजबुल्ला ने ''सुन्नी इस्लाम (हन्फी मजहब) की नंगी तस्वीर'' काफी रोचक तरीके से लिखी है. बात शार्ली हेब्दो के कार्यालय में हुए कत्लेआम की हो, या उस कार्टून को पेरिस के स्कूल में दिखाने वाले शिक्षक की गला रेत कर की गई हत्या की हो, या अमेरिका के ट्विन टावर को नेस्तनाबूत करने की घटना हो, (भारत के लिये ये डेली सोप ओपेरा की तरह है) कहने का तात्पर्य साफ है कि ये पंथ एड्स की तरह घातक है, यानि इसके चंगुल में फंसाने के लिये वो बुरी सूरत वाले और लंबी दाढ़ी वाले ठीक वैसे ही प्रलोभन देते हैं, जैसे कोई

वैश्या किसी मर्द को आकर्षित करने के लिये करती है. और जैसे ही आपने पंथ को अपनाया, (यानी उस एड्स संक्रमित महिला से संबंध बनाया) कि वापस लौटने का – यानी न तो उस धर्म को छोड़ने की और ना ही ईशनिंदा करने देने की इजाजत है (ठीक वैसे ही जैसे एड्स लाईलाज है, आप ठीक नहीं हो सकते बल्कि दूसरां को संक्रमित जरूर क सकते हैं).

अभी हाल ही में एक कॉमेडियन – जिसका नाम मुनव्वर फारूकी है, इंदौर के एक होटल में स्टैंडअप कॉमेडी कर रहा था, बल्कि कॉमेडी के नाम पर हिंदू धर्म के देवो–देवताओं का मजाक बना रहा था. राम, सीता, हनुमान, गणेश, शिव इत्यादि देवताओं पर गंदे कमेंट कर रहा था, हालांकि ये बात अलग है कि सुनने वाले और तालियां बजाने वालों में उसके सम्प्रदाय के लोग शायद ही थे। कुछ हिंदुवादी लोगो ने स्टेज पर चढ कर उसे ऐसे अश्लील जोक करने से मना किया लेकिन उसने इन लोगों की बातों को दरकिनार करते हुए अपना एकसूत्री एजेंडा चालू रखा। लेकिन जब इन्हीं हिंदुवादी लागों ने स्टेज पर उसकी पिटाई कर दी और थाने ल जा कर एफ. आई. आर. कर दिया तो देश के कई लिब्रांडु और हरामखोर किस्म के लोग उसके समर्थन में यह कहते हुए आ गए कि देश के अल्पसंख्यक और खासकर चुसलमान के खिलाफ देश में माहौल बनाया जा रहा है और संविधान के मूल अधिकार में अभिव्यक्ति की आजादी को दबाया जा रहा है। पहले के जमाने में इस सम्प्रदाय के लोग तलवार के जोर पर गैर मुस्लिमों का जबरन धर्म परिवर्तन कराते थे, लेकिन आज के दौर में इनका एजेंडा बदल गया है, ये लोग दूसरे धर्म के लोगों की धार्मिक भावनाओं को न सिर्फ आहत करते हैं बल्कि उन्हें नीचा दिखाने का कोई भी मौका नहीं चूकते हैं। लेकिन
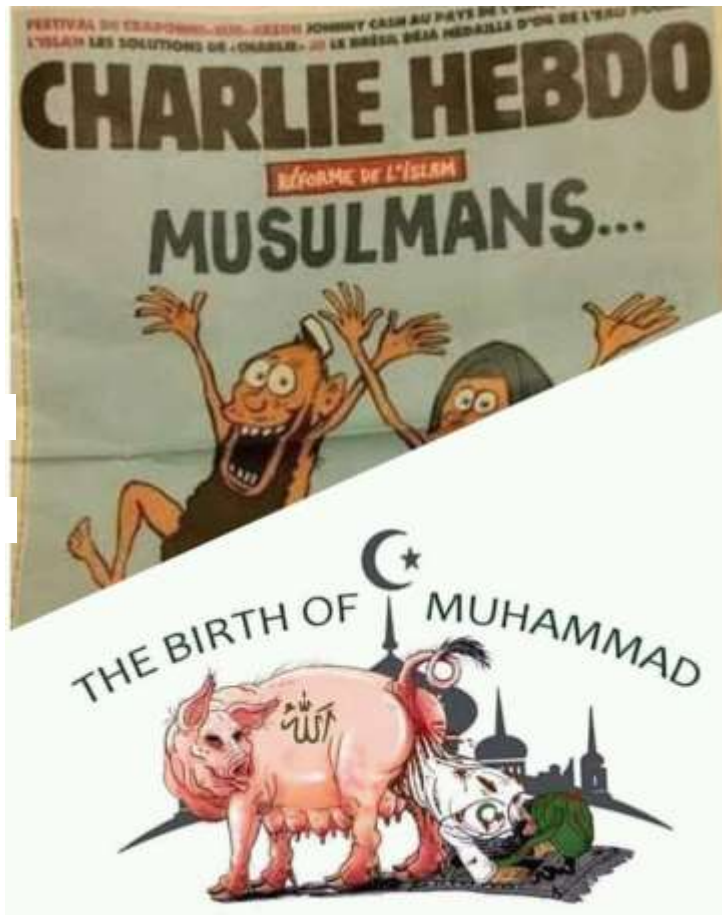
जैसे ही संवैधानिक तरीके से इनपर कानूनी शिकंजा कसा जाता है, ये लोग धार्मिक कार्ड खेल जाते हैं। वो बात अलग है कि इनके नबी के का मजाक बनाने वाले या उनके लिये आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग करने वाले या उनकी कार्टून बनाने वाले की एक ही सजा ''बीहेडिंग' यानी सर कलम कर देने की प्रथा है। भारत में भी इन लोगों ने कमलेश तिवारी का सर कलम कर दिया था और अभी पेरिस की घटना का तो वैश्विक रूप से आलोचना की जा रही है, लेकिन सामाजिक रूप से ''गजवा–ए–हिंद'' की इनकी रणनीति काफी पहले से देश में की जा रही है, चाहे वो मकबूल फिदा हूसैन जैसे चित्रकारों की बनाई बेहूदा तस्वोरें हों, चाहे बॉलीवुड के स्कृप्ट राईटर–गीतकार–संगीतकार हों, चाहे राहत इंदौरी जैसे वाहियात शायर हों, ये सब उसी गजवा–ए–हिंद के सिपाही हैं और इनका विजन साफ है। जिन देशों में चुसलमान अल्पसंख्यक हैं, वहां इन्हें सेक्युलर कानून चाहिये, लेकिन जो इस्लामिक देश हैं, वहां सेक्युलरिज्म नहीं बल्कि शरीया कानून है, और उस वाहियात आदमी की कथित लिखी कुरान और हदीस के हिसाब से चलने का कानून है। ये डबल स्टैंडर्ड विश्व के 99.99 प्रतिशत चुसलमानों का है।

सन 1923 में मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें "19 वीं सदी का महर्षि" और "कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी" प्रकाशित हुई थी. पहली पुस्तक में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद का सत्यार्थ प्रकाश के 14 सम्मुलास में कुरान की समीक्षा से खीज कर उनके विरुद्ध आपतिजनक एवं घिनोना चित्रण प्रकाशित किया था, जबकि दूसरी पुस्तक में भगवान् कृष्ण के पवित्र चरित्र पर कीचड़ उछाला गया था. उस दौर में विधर्मियों की ऐसी शरारतें चलती ही रहती थी पर धर्म प्रेमी सज्जन उनका प्रतिकार उन्ही के तरीके से करते थे. महाशय राजपाल ने स्वामी दयानंद और श्री कृष्ण जी महाराज के अपमान का प्रतिउत्तर 1924 में रंगीला रसूल के नाम से पुस्तक छाप कर दिया जिसमे मुहम्मद साहिब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत की गयी थी. यह पुस्तक उर्दू में थी और इसमें सभी घटनाएँ इतिहास सम्मत और प्रमाणिक थी. पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर "दूध का दूध और पानी का पानी छपा था". वास्तव में इस पुस्तक के लेखक पंडित चमूपति जी थे जो की आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् थे. वे महाशय राजपाल के अभिन्न मित्र थे. मुसलमानों के ओर से संभावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक में अपना नाम नहीं देना चाहते थे इसलिए उन्होंने महाशय राजपाल से वचन ले लिया की चाहे कुछ भी हो जाये, कितनी भी विकट स्थिति क्यूँ न आ जाये वे किसी को भी पुस्तक के लेखक का नाम नहीं बतायेगे. महाशय राजपाल ने अपने वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की, पर पंडित चमूपति सरीखे विद्वान् पर आंच तक न आने दी. 1924 में छपी रंगीला रसूल बिकती रही पर किसी ने उसके विरुद्ध शोर न मचाया फिर

महात्मा गाँधी ने अपनी मुस्लिम परस्त निति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लेख लिखा. इस पर कट्टरवादी मुसलमानों ने महाशय राजपाल के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया. सरकार ने उनके विरुद्ध 153ए धारा के अधीन अभियोग चला दिया. अभियोग चार वर्ष तक चला. राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा 1000 रूपये का दंड सुनाया. इस फैसले के विरुद्ध अपील करने पर सजा एक वर्ष तक कम कर दी गयी. इसके बाद मामला हाई कोर्ट में गया. कँवर दिलीप सिंह की अदालत ने महाशय राजपाल को दोषमुक्त करार दे दिया. मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे. खुदाबख्स नामक एक पहलवान मुसलमान ने महाशय जी पर हमला कर दिया जब वे अपनी दुकान पर बैठे थे पर संयोग से आर्य सन्यासी स्वतंत्रानंद जी महाराज एवं स्वामी वेदानन्द जी महाराज वहाँ उपस्थित थे. उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा की वह छुट न सका. उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया, उसे सात साल की सजा हुई. रविवार 8 अक्टूबर 1927 को स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को महाशय राजपाल समझ कर अब्दुल अज़ीज़ नमक एक मतान्ध मुसलमान ने एक हाथ में चाकू ,एक हाथ में उस्तरा लेकर हमला कर दिया. स्वामी जी को घायल कर वह भागना ही चाह रहा था की पड़ोस के दूकानदार महाशय नानक चंदजी कपूर ने उसे पकड़ने का प्रयास किया. इस प्रयास में वे भी घायल हो गए. तो उनके छोटे भाई लाला चूनीलाल जी जी उसकी ओर लपके. उन्हें भी घायल करते हुए हत्यारा भाग निकला पर उसे चौक अनारकली पर पकड़ लिया गया. उसे चोदह वर्ष की सजा हुई ओर तदन्तर तीन वर्ष के लिए शांति की गारंटी का दंड सुनाया गया. स्वामी सत्यानन्द जी के घाव ठीक होने में करीब डेढ़ महीना लगा. 6 अप्रैल 1929 को महाशय अपनी दुकान पर आराम कर रहे थे. तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोप दिया जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया. हत्यारा अपने जान बचाने के लिए भागा ओर महाशय सीताराम जी के लकड़ी के टाल में घुस गया. महाशय जी के सपूत विद्यारतन जी ने उसे कस कर पकड़ लिया. पुलिस हत्यारे को पकड़ कर ले गयी. देखते ही देखते हजारों लोगो का ताँता वहाँ पर लग गया. देवतास्वरूप भाई परमानन्द ने अपने सम्पादकीय में लिखा हैं की "आर्यसमाज के इतिहास में यह अपने ढंग का तीसरा बलिदान हैं. पहले धर्मवीर लेखराम का बलिदान इसलिए हुआ की वे वैदिक धर्म पर किया जाने वाले प्रत्येक आक्षेप का उत्तर देते थे. उन्होंने कभी भी किसी मत या पंथ के खंडन की कभी पहल नहीं की. सैदेव उत्तर- प्रति उत्तर देते रहे. दूसरा बड़ा बलिदान स्वामी श्रद्धानंद जी का था. उनके बलिदान का कारण यह था की उन्होंने भुलावे में आकर मुसलमान हो गए भाई बहनों को, परिवारों को पुन: हिन्दू धर्म में सम्मिलित करने का आन्दोलन चलाया और इस ढंग से स्वागत किया की आर्य जाति में "शुद्धि" के लिए एक नया उत्साह पैदा हो गया. विधर्मी इसे न सह सके. तीसरा बड़ा बलिदान महाशय राजपाल जी का है,

जिनका बलिदान इसलिए अद्वितीय है की उनका जीवन लेने के लिए लगातार तीन आक्रमण किये गए. पहली बार 26 सितम्बर 1927 को एक व्यक्ति खुदाबक्श ने किया दूसरा आक्रमण 8 अक्टूबर को उनकी दुकान पर बैठे हुए स्वामी सत्यानन्द पर एक व्यक्ति अब्दुल अज़ीज़ ने किया. ये दोनों अपराधी अब कारागार में दंड भोग रहे हैं. इसके पश्चात अब डेढ़ वर्ष बीत चूका हैं की एक युवक इल्मदीन, जो न जाने कब से महाशय राजपाल जी के पीछे पड़ा था, एक तीखे छुरे से उनकी हत्या करने में सफल हुआ हैं. जिस छोटी सी पुस्तक लेकर महाशय राजपाल के विरुद्ध भावनायों को भड़काया गया था, उसे प्रकाशित हुए अब चार वर्ष से अधिक समय बीत चूका हैं.".महाशय जी का अंतिम संस्कार उसी शाम को कर दिया गया. परन्तु लाहौर के हिंदुयों ने यह निर्णय किया की शव का संस्कार अगले दिन किया जाये. पुलिस के मन में निराधार भूत का भय बैठ गया और डिप्टी कमिश्नर ने रातों रात धारा 144 लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जुलुस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया. अगले दिन प्रात: सात बजे ही हजारों की संख्या में लोगो का ताँता लग गया. सब शव यात्रा के जुलुस को शहर के बीच से निकल कर ले जाना चाहते थे पर कमिश्नर इसकी अनुमति नहीं दे रहा था. इससे भीड़ में रोष फैल गया. अधिकारी चिढ गए. अधिकारियों ने लाठी चार्ज की आज्ञा दे दी. पच्चीस व्यक्ति घायल हो गए . अधिकारियों से पुन: बातचीत हुई. पुलिस ने कहाँ की लोगों को अपने घरों को जाने दे दिया जाये. इतने में पुलिस ने फिर से लाठीचार्ज कर दिया. 150 के करीब व्यक्ति घायल हो गए पर भीड़ तस से मस न हुई. शव अस्पताल में ही रखा रहा. दुसरे दिन सरकार एवं आर्यसमाज के नेताओं के बीच एक समझोता हुआ जिसके तहत शव को मुख्य बाजारों से धूम धाम से ले जाया गया. हिंदुयों ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों से पुष्प वर्षा करी. ठीक पौने बारह बजे हुतात्मा की नश्वर देह को महात्मा हंसराज जी ने अग्नि दी. महाशय जी के ज्येष्ठ पुत्र प्राणनाथ जी तब केवल 11 वर्ष के थे पर आर्य नेताओं ने निर्णय लिया की समस्त आर्य हिन्दू समाज के प्रतिनिधि के रूप में महात्मा हंसराज मुखाग्नि दे. जब दाहकर्म हो गया तो अपार समूह शांत होकर बैठ गया.ईश्वर प्रार्थना श्री स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने करवाई. प्रार्थना की समाप्ति पर भीड़ में से एकदम एक देवी उठी. उनकी गोद में एक छोटा बालक था.यह देवी हुतात्मा राजपाल की धर्मनिष्ठा साध्वी धर्मपत्नी थी. उन्होंने कहा की मुझे अपने पति के इस प्रकार मारे जाने का दुःख अवश्य हैं पर साथ ही उनके धर्म की बलिवेदी पर बलिदान देने का अभिमान भी हैं. वे मारकर अपना नाम अमर कर गए.

वैसे देखा जाए तो अंबेडकर के संविधान में देश के नागरिकों को बहुत सारे मूल अधिकार दिये गए हैं, लेकिन कमोबेश ये अधिकार कथित अल्पसंख्यक समुदाय को ही प्राप्त है।

इस आलेख का मुख्य मकसद विशेषकर हिन्दु समाज को प्रसिद्ध पुस्तक ''रंगीला रसूल'' को उसकी मूल भाषा में हार्डकापी और पीडीएफ प्रारूप में उपलब्ध कराना है, ताकि चुस्लाम के प्रति सॉफ्ट कॉर्नर रखने वाले गैरचुस्लामिक लोगों और संगठनों की आंखों से चश्मा उतारा जा सके. यह आलेख पाठकों को मुद्रण एवं वितरण की पूरी छूट देता है, ताकि ये ज्यादा से ज्यादा लोगों की पहुँच तक जा सके और साथ ही राष्ट्रवादियों से उम्मीद है कि कम से कम तीन लोगों को हार्डकॉपी और तीन लोगों को पी.डी.एफ. प्रारूप में इस पवित्र ग्रन्थ को अग्रेशित करने का कष्ट करेंगे. आने वाले समय में और अधिक साक्ष्यों के साथ ''रंगीला रसूल–2'' की तैयारी की जा रही है जिससे विश्व का न सिर्फ मनोरंजन हो, बल्कि उस ''खूनी Blue Beard" की वास्तविकता से लोग अवगत हो सकें.

चिंगारी प्रेस

पौष कृष्णपक्ष द्वितीया 2077 विक्रमी
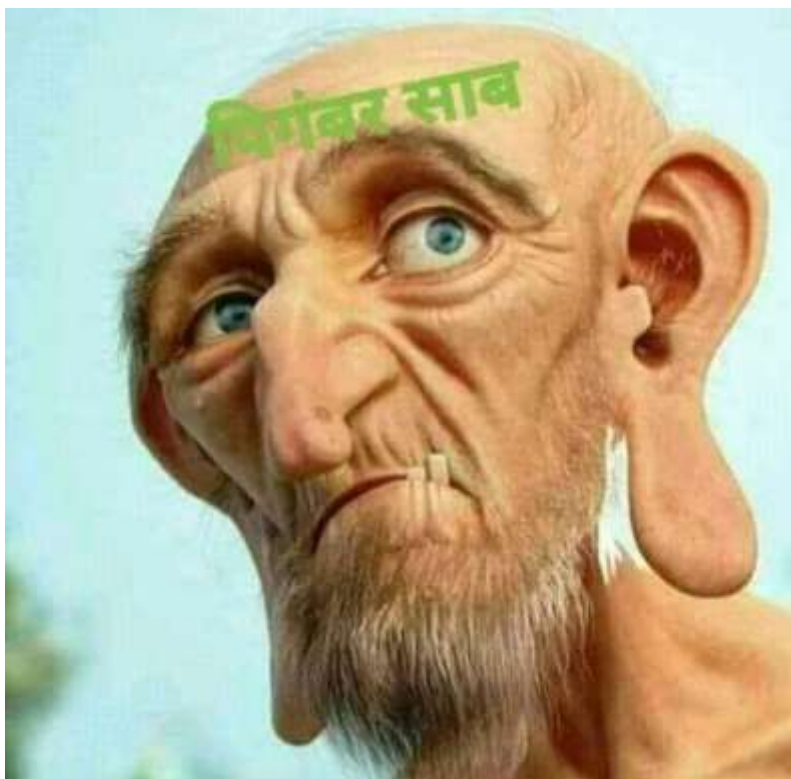
प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने हजरत मौहममद साहब के जीवन को पच्चीस वर्ष के बाद से आरम्भ किया है, उससे पहले का कोई वर्णन नहीं दिया गया, अतः पाठकों की जानकारी के लिये संक्षेप में जन्म से पच्चीस वर्ष तक के जीवन से परिचित कराना मैं अपना पावन कर्तव्य समझता हूँ।

हजरत मौहम्मद के पिता का नाम अब्दुल्लाह था, जो अब्दुल मुताल्लिब के बेटे थे, आप कुरैश खानदान से ताल्लुक रखते थे, जो अरब का एक प्रमुख वंश था तथा तमाम वंशजों में अपना प्रमुख स्थान रखता था, आपका जन्म 12 रबीउल, दिन सोमवार (11 नवम्बर) सन् 569 ई0 को मक्के में हुआ। आपके वालिद आपके जन्म से पूर्व ही परलोक सिधार गए थे। अतः आपका प्रारंभिक पालन–पोषण आपके दादा अब्दुल मुताल्लिब द्वारा हुआ, उनके मरने के बाद (तब आपकी उम्र मात्र 8 वर्ष की थी) आपके चचा हजरत अबू तालिब ने आपकी देखभाल की।

आपकी माता हजरत अमीना ने अपना दूध पिला कर बड़ा किया परन्तु वहॉ के रिवाज के अनुसार कुछ समय के लिये वहां के नजदीक के गॉव में शारीरिक व बौद्धिक उन्नति के लिये एक महिला जिसका नाम हलीमा सादिया था, के सानिध्य में भेज दिया। गांव से लौटने के थोड़े समय बाद ही आपकी माता जी का देहान्त हो गया। अब सारी जिम्मेदारी आपके चचा के एपर आ गई, चचा का व्यापार था, आपको भी अपने व्यापार में लगा लिया, तथा बकरियॉ चराने का कार्य दिया गया। इसी तरह बकरियॉ चराते–चराते समय बीत गया और आपने जवाने में कदम रखा, आपको खुदा ने गजब का हुस्न, बॉका शरीर, शुद्ध हृदय व दिल में ईमानदारी बख्शी, आपका सारा जीवन गरीबी और संघर्ष में बीता, मॉ का साया भी बचपन में ही उठ गया था। बाप का प्यार क्या होता है? इसका तो कभी अनुभव ही नहीं हुआ।

पच्चीसवें वर्ष में एक धनी बेवा महिला खुदीजा जो उस समय चालीस वर्ष की थी, की ऑख हजरत से लड़ गई और यह भी दिल दे बैठे, इनकी भी पच्चीस साल बाद लॉटरी सी खुली थी, जिस प्यार के लिये बेचारे पच्चीस साल तक तरसते रहे, वह सारा प्यार जो पत्नी और मॉ दोनों के रूप में सांझा प्राप्त हुआ, उससे बड़ा और सौभाग्य क्या हो सकता था? उस समय तो अगर खुदीजा की आयु साठ वर्ष भी होती तो भी हजरत उसका प्रस्ताव न ठुकराते।

अब आप आगे मुहम्मद साहब के पवित्र जीवन चरित्र को ध्यान पूर्वक पढ़िये और उनके जीवन से लाभ उठाईये। क्योंकि ऐया शिक्षाप्रद जीवन वृत्त मुश्किल से

ही किसी खुदा के पैगम्बर का मिलेगा, जिस पर चल कर जन्नत ही जन्नत है। जिसमें प्रत्येक बात को सप्रमाण उद्‌धृत किया गया है जिसे चभी सुन्नी मुसलमान भाई प्रमाण के रूप में मानते हैं, अगर आप इसको दोजख का मार्ग समझते हैं तो आज ही दिये गए ईमान को वापिस ले सकते हैं, क्योंकि बिना वास्तविकता जाने कियी का मुरीद हो जाना स्वाभाविक है।

इस पूरे जीपन चरित्र को बिना किसी भेदभाव के सप्रमाण लिखा गया है। जिससे साफ पता चलता है कि जिस सम्प्रदाय की बुनियाद रखने वाले ही स्वयं इतने पवित्र रहे हों, कि जिनकी मिशाल इतिहास में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती। तो उसके उपदेश व सिद्धांत कितने शिक्षाप्रद सिद्ध होंगे? पाठक स्वयं विचार करें।

वितरक :—

“मौहम्मद रफी”

।।ओम्।।

पैगम्बर की तारीफ

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके।
मैं तो जाउॅं अपने ''रंगीले रसूल'' के सदके।।

सदा बहार सजीला रसूल है मेरा,
हों लाख पीर रसीला रसूल है मेरा।
ज़हे जमाल छबीला रसूल है मेरा,
रेहीने ईश्क रंगीला रसूल है मेरा।।

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके।
मैं तो जाउॅं अपने ''रंगीले रसूल'' के सदके।।

किसी की बिगड़ी बनाना है, ब्याह कर लैंगे,
बुझा चिराग जलाना है, ब्याह कर लैंगे।
किी का रूप सुहाना है, ब्याह कर लैंग,
किसी के पास खजाना है, ब्याह कर लैंगे।।

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके।
मैं तो जाउॅं अपने ''रंगीले रसूल'' के सदके।।

"चमूपति एम0ए0"

“बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम”

खा़नेदार (गृहस्थ) पैगम्बर

मुहम्मद की अज़मत इसमें है कि वह खा़नेदार गृहस्थ पैगम्बर है, मुसलमान भाई पैगम्बर की इस खुसूसियत को बड़े अभिमान के साथ पेश करते हैं कि देखो जो बात दूसरे पैगम्बरों में नहीं है वह मुहम्मद में है, यही मुहम्मद की फ़जीलत (तारीफ़) है। यह बात मेरे दिल में लगती है।

‘‘दयानन्द’’ बाल ब्रह्मचारी हैं, वह देवता है, मैं मामूली मनुष्य उनके ब्रह्मचर्य को कहॉ पहुॅचूं?

‘‘महात्मा बुद्ध’’ ने शादी की, मगर घर से निकल गया, युवावस्था में औरत और बच्चों को अकेला छोड़कर साधु बन गया, मुझे न उस साधुता की चाह है, और न उसे अख्तियार करने का हौसला है। ईसा ने घर–बार बसाने का कोई काम ही नहीं किया।

‘‘मुहम्मद ने शादी की, नहीं! नहीं!! बल्कि शादियॉ कीं हर तरह की औरतों से शादियॉ की, बेवा से, कुॅवारी से, बुढ़िया से, जवान से, हॉ! हॉ!! एक नवयुवती से भी शादी की। हर किस्म की शादी का रंग देखा, उसके भले बुरे को पढ़ा ही नहीं बल्कि उसने उसे आजमाया भी तथा परखा भी।

‘‘मुहम्मद’’ एक अनुभवी पैगम्बर है। उसके इलहाम की बुनियाद उसका तजुरबा है, तजुरबा भी ऐसा कडुवा कि अलअमान, मुहम्मद ने उसे मीठा घूॅट समझ कर पी लिया, किस लिये? सिर्फ़ सबके फायदे के लिए और दूसरों को नसीहत देने के लिये।

मुहम्मद की जिंदगी शिक्षाप्रद है, उपदेशों से भरी हुई, और इबादतों से भरपूर, वाकई मुहम्मद ‘‘पथ प्रदर्शक’’ है।

मैं खा़नेदार! मरा पैगम्बर खा़नेदार वह मेरा गुरू और मैं उसका चेला। उपनिषदों मे लिखा है गुरूजनों के अच्छे गुणों को ग्रहण करो और बुरी बातों को छोड़ दो।

इसी नज़रिये से हम आज घर बार वाले, रंगीले, छबीले, रसीले, रसूल की जिंदगी की बाबत खा़नेदारी (गृहस्थाश्रम) पर एक रसीली निगाह डालना चाहते हैं।

मुहम्मदी तथा गैर मुहम्मदी सब इसको पढ़ने में शरीक हो सकते हैं क्योंकि ‘‘मुहम्मद’’ तो मुहम्मदियों और गैरमुहम्मदियों अर्थात् दोनों का है।

“ब्रह्मचारी” मुहम्मद

मुहम्मद की पहली शादी 25 साल की उमर में हुई, यहॉ तो आर्य समाजियों को भी मानना होगा, कि मुहम्मद ने शादी के मुताबिक जिंदगी का पहिला हिस्सा कुंवारे रहकर गुजारा, मुहम्मद ब्रह्मचारी था, और उसका हक था कि वह शादी करे।

हम सबसे पहले एक नज़र मुहम्मद की उसी (ब्रह्मचर्य) अवस्था पर डालना चाहते हं, क्योंकि दुनियां में ऐसे बदबूदार दिमाग वाले लोग हैं जो नाहक भलेमानसों की आदतों पर तथा उनके कर्मों पर और उनके कथन पर शक (सन्देह) करते हैं।

हम मुहम्मद को ब्रह्मचारी मानते हैं क्योंकि उसने इस बारे में अपनी शहादत आप दे रखी है, एक मुकाम पर आप कहते हैं कि एक रात मैं कुरैशी लड़के के साथ मिलकर रवड़ (भेड़ आदि) चरा रहा था, मैंने उस लड़के से कहा कि तू अगर रेवड़ की पास बानी (निगाहबानी) करे तो मैं जाउँ? और जिस काम में नौजवान लोग रात गुजारते हैं, मैं भी गुजार आउँ।

यह कह कर मुहम्मद मक्का चला गया। मगर यहाँ एक शादी की दावत ने उसकी तवज्जह (ध्यान) अपनी तरफ खींच ली और उसको नींद आ गई। एक और रात वह फिर इसी इरादे से मक्का पहुंचा मगर स्वर्गीय प्रलोभनों ने उसके दिल को काबू में कर लिया और उसे सोते–सोते सुबह हो गई।

मुहम्मद कहता है कि इन दो वाकयात के बाद मेरा दिल बुराई की तरफ नहीं बढ़ा।

"हयात मुहम्मदी म्योरसाहब कृत"

हमें मुहम्मद के कौल (कथन) पर विश्वास है, क्योंकि उसे हमामीन कहा गया है। हम मानते हैं कि, उसका दिल गुनाह के नतीजे से बचा हुआ था। दो दो दफा उसे शैतान ने बरगलाया अर्थात् पथ भ्रष्ट किया मगर ईश्वरीय प्रेरणा ही इसमें मददगार सिद्ध हुई और हमारा "रंगीला रसूल" इस गुमराही के गड्ढे से बाल–2 बच गया। उसने अमलन् अर्थात् शारीरिक रूप से गुनाह नहीं किया। मुहम्मद पूर्ण ब्रह्मचारी था, उसने 25 साल की उमर तक शादी नहीं की और अपनी जवानी की उमंगों के झकोरों से बचता रहा।

"माई खुदीजा"

हम खुदीजा को "माई खुदीजा ही कहेंगे, क्योंकि उसकी उम्र 40 वर्ष की थी जब वह मुहम्मद के मकान (अन्तःपुर) में आई, बल्कि अगर सच्ची बात लिखी जाए तो यों कहिये कि मुहम्मद खुद उसके घर में गए थे। मुहम्मद 25 साल के थे। शकल और सूरत में खूबसूरत थे, नेक आदत थे, शरीफ घराने के ही नहीं बल्कि शरीफ ठिकाने के भी थे।

परन्तु खुदीजा बेवा (विधवा) थी, वह कुरैशी यानी मुहम्मद की जाति बिरादरी की थी, उसके दो पति मर चुके थे, वह बाल–बच्चे वाली थी परन्तु मुहम्मद आर उसकी उमर का यह मुकाबला था कि खुदीजा के पास दौलत थी, जब सौदागरों के झुण्ड गैर मुल्कों में जाते थे तो यह भी अपने एजेन्ट रवरना करती थी। खुदा बरकत देता था, तिजा़रत (व्यापार) में सवाया, ड्योढा मुनाफ़ा होता था। सारा मक्का उसे जानता था, शादियों की दरख्वास्तें भी कई बांके दिलचलों ने दी थी मगर वह अपनी दौलत और हालत पर संतुष्ट थी, व्यर्थ में वह दुनियाँ का झंझट अपने सिर पर मोल नहीं लेना चाहती थी।

एक साल उसने मुहम्मद को एजेन्ट बनाकर व्यापारियों के झण्ड के साथ भेजा, वह आमीन था, औसत से ज्यादा लाभ उठाया। मकान की छत पर बैठी खुदीजा देख रही थी कि सामने से एक शुतुर सवार आता हुआ मालूम हुआ, वह कौन था? मुहम्मद! मुहम्मद ने तिजारत का हिसाब दिया और अपनी उजरत ले कर रवाना हुआ। इसकी शरमदार ऑखें, जरूरत से कम बोलना, कुदरती खूबसूरती और व्यापार का खरापन, बेतकल्लुफ की सादगी जो दिल में थी वहीं जुबान पर तथा वही अमल में बुढिया के दिल पर यह बेसाख़्तगी (स्वाभाविक रूप से) असर कर गई और उसे अपनी जिंदगी का शरीक बनाना चाहा।

खुदीजा (ताहरा) पवित्र थी। लोग उसके हुस्न के तथा उसके दौलत के परवाने थे, यहॉ पर वह खुद परवाना बनके गिरी, फिर ऐसी कौन सी शमा थी जो उसे गिरता देखती और चमक न उठती? मुंह फेर लेती या उससे उल्टा रूख दिखाती?

खुदीजा का बाप जिन्दा था। उसकी तरफ से अंदेशा था कि वह रास्ते का रोड़ा बनेगा। इसी समय खुदीजा ने एक दावत की, उसमे उसने अपने और मुहम्मद के खानदान वालों को निमन्त्रित किया, शराब ढलने लगी। खुदीजा का बाप भी दावत में शामिल हुआ परन्तु वह हद से ज्यादा पी गया। बूढ़ा था, बहक उठा। यही वह मौका था जिसकी ताक में सब लोग थे। उसे शादी के कपड़े पहना दिये गए और उसका (खुदीजा) निकाह हो गया। जब उसे होश आया तो वह हक्का बक्का सा रह गया, मगर पक्षी पिंजरे से निकल चुका था, बड़े और बुजुर्गो का कहना मानना पड़ा, अन्ततः फिर खामोश हो गया।

"हयात मुहम्मदी म्योरसाहब कृत"

खैर "मुहम्मद" दूल्हा हुए, माई खुदीजा के पति बन उसकी जानों माल के मालिक और रक्षक बने। बचपन में गरीब हो गए थे, बहुत दिनों तक मॉ की ममता का सुख न देखा था। इस औरत से ब्याह कर दोनों मुरादें मिल गई। मुहम्मद एसे चाहे जो भी कहे, परन्तु हम तो उस माई खुदीजा ही कहेंगे, वह हमारी मॉ है और आर्य शास्त्रों में एक हालत में औरत को मॉ भी कहा है। यह माई खुदीजा की तीसरी शादी थी। माई खुदीजा से मुहम्मद की छः संतानें हुई जिनमें दो लड़के और

चार लड़कियॉ थी, पहला लड़का कासिम जो दो बरस का हो कर मर गया और दूसरा जो बिल्कुल बच्चा ही था, चल बसा।

''सीरतुल्लबी मौलाना शबली कृत''

डाक्टरों की राय है कि औरत 40 या 45 वर्ष की उमर तक बच्चे पैदा कर सकती है मगर उस उमर के बच्चे ज्यादा दिन तक जिन्दा रहने वाले नहीं होते। मतलब यी है, कि अगर बच्चे पैदा करने के लिये शादी करना हो तो औरत की यह उमर इस मतलब के लायक नहीं और खुदीजा की उमर इस मतलब के लायक नहीं थी।

मुहम्मद अकेले में रहना पसन्द करते थे, ख्यालात की दुनियां में मस्त रहते थे, पहाड़ों में, जंगलों में, मैदानों में, रेगिस्तानों में, घर के कोने (एकान्त) में जा बैठते और अपने दिल से बातें किया करते थे यही पागलपन इनकी पैगम्बरी की बुनियाद (जड़) थी।

अगर रोजी रोटी की फिकर होती तो यह आजादी कहॉ मिलती? और पैगम्बरी का दावा क्योंकर होता? खुदीजा की शादी ने ऐसी प्रेरणा मुहम्मद के साथ की कि ऐसा समय उपस्थित हुआ।

अरब में पाप होता था। निहायत खौफनाक पाप होता था, और मुहम्मद का दिल नेकी के ख्यालात से भरा हुआ था, अरबी मुर्तिपूजक थे और मुहम्मद साहब ने खुले मैदान में खुले आकाश में, बड़े बड़े जंगलों में किसी बड़ी भारी ताकत का अन्दाजा किया था। इसे यकीन हो गया था कि परमात्मा एक है और उसकी कोई शक्ल सूरत नहीं है।

खुदीजा के गुलामों में एक जैद नाम का इसाई गुलाम था, उससे मुहम्मद की बातचीत हुआ करती थी और वह इसाई धर्म के अनुसार मुहम्मद को विश्वास दिलाता था। मुहम्मद को जैद से अधिक स्नेह हो गया था, और उसे खुदीजा से अपने लिये मांग लिया, खुदीजा के रिश्तेदारों में कुछ ऐसे लोग भी थे, जो इसाइ धर्म को मानते थे, उन्होंने मुहम्मद के दिली हौसलों को मिटाने में पूरी मदद की।

मुहम्मद को यकीन हो गया कि दुनियां में लोग गुमराह हो रहे हैं, उसे अपनी इस हालत पर रोना आता था उसके दिल में गहरा दर्द था, जो अरबी जुबान में बड़े ही दिल्चस्प शैरों के रूप में कभी–कभी निकल रहा था, यही कुरान की पहली आयत है जो न मालूम किस कारण से कुरान के अन्त में लिखी गई है? इसमें तड़फ है तथा तेजी है, सत्यता ही नहीं, बल्कि बेकरार आरजू भी है और असलियत की खोज है।

मुहम्मद का हौसला बढ़ता गया और धीरज का कोई उपाय न देख कर आखिर उसे ख्याल हुआ कि आत्महत्या कर लेनी चाहिये, क्योंकि इस रोने–धोने की जिंदगी से क्या फायदा? यहां पर खुदीजा का बुढ़ापा बहुत कुछ काम आया, और कोई नौजवान औरत होती तो उसको पाग समझती और उसका साथ छोड़ देती, आप डरती और दूसरे को भी डराती, खुदीजा ने मुहम्मद को धैर्य बंधाया। मुहम्मद को शक था कि मुझपर जिन्नों का जादू है। यह इल्हाम नहीं, बल्कि शैताना की करतूत है, खुदीजा ने जिन्नों की जांच की और मुहम्मद को विश्वास दिलाया कि ये

फरिश्ते हैं, इनका पैगाम दुरूस्त है, और जब मुहम्मद ने कहा कि या तो वह दुनियां को बदल देगा या अपना ही खात्मा कर लेगा। तक खुदीजा ने दुनियां को बदलने वाले इरादे को पसन्द किया और खुद उस मजहब की जिसके प्रचार का मन्सूबा मुहम्मद ने बांधा था, वह उसमें सबसे पहली मददगार (सहायक) बनी।

''कससुलम्बिया''

मुहम्मद को इल्हाम के वक्त बड़ी तकलीफ होती थी। उसके मुंह से झाग आने लगते, तमाम बदन से पसीना निकल पड़ता तथा बाहर की सुध बुध ना रहती थी, बहुतेरे लोगों का ख्याल था कि यह मिरगी के लक्षण थे, मुहम्मद उस समय मरीज हो जाते थे, तब खुदीजा उनकी सेवा सुश्रुसा करती थी, उसके बदन पर कपड डालती और पानी के छींटे देती, मतलब यह है कि उसे होश में लाती।

''बुखारी बाबा अलबही''

मुहम्मद की पैगम्बरी के पहिले आंसू खुदीजा की गोद में बहाये गये। यह कहानी बहुत लम्बी है, किस्सा यौं है कि मुहम्मद ने अपने आपको मौजूदा मजहब और इसके कानून से अलग कर लिया और अपने पीरां (भक्तजनों) को भी पिछले मजहब से बागी बनने के लिये उपदेश देने लगा। इसमें सबमें मुहम्मद के प्रति मुखालफत पैदा हो गई थी, और लोग मुहम्मद की जान के दुश्मन बन गए, अरब का दस्तूर था कि ''खून का बदला खून'' से लेते थे। किसी खानदान के एक आदमी को किसी दूसरे खानदान का कोई आदमी कत्ल कर देता था तो इन खानदानों में हमेशा के लिये मुखालफत पैदा हो जाती थी। दोनों खानदान एक दूसरे के दुश्मन बन जाते थे,

मगर मुहम्मद के लिये बचने का एक तरीका था, वह यह कि एक तो उसका चचा उसकी हिमायत पर था, दूसरी खुदीजा थी, जिसका लिहाज सभी छोटे बड़े करते थे। मुहम्मद ने मुसीबत सही, दुख बर्दाश्त किये, लेकिन उस बीवी की बरकत से उसकी जान पर ऑच न आई। आखिर जब मुहम्मद 50 का हुआ तो खुदीजा का इन्तकाल हो गया तथा चचा भी चल बसे। अब मुहम्मद अनाथ हो गए, लाचार होकर हिजरत (देश त्याग) करके मदीने चले गये।

पाठको, इससे अन्दाजा लगा लें कि खुदीजा का वजूद मुहम्मद के लिये किस कदर भला था? यही वजह थी कि इसकी मौत के बाद मुहम्मद के मकान में सिलसिलेवार बीवियॉ थीं और एक दूसरे से खूबसूरती में बढ़ चढ़ कर थीं। सभी प्रकार से आनन्द और आराम था। हुकूमत थी तथा सभी अख्तियार था, तो भी खुदीजा की याद मुहम्मद के दिल से न भूलती थी। यहां तक कि ''आयशा'' का अपनी जिन्दा सबूतों से भी वह लौ (लगन) न थी जो मरहूमा मगफूरा खुदीजा के नाम से हो रही थी।

खुदीजा ने मुहम्मद को बचाया, 25 वर्ष के जमाने में! जब तक वह मुहम्मद की बीवी बन कर जिन्दा रही, मुहम्मद को कभी भी दूसरी शादी का खयाल नहीं आया, आर्य समाज में खा़नेदारी (गृहस्थाश्रम) की मियाद 25 वर्ष मुकर्रर है। यह समय मुहममद ने बड़ी पवित्रता से निबाहा, इसलिये इसे हम आर्य गृहस्थ कह सकते हैं।

अगर मुहम्मद ने खुदीजा से शादी न की होती, बल्कि उसका लड़का बनना मंजूर कर लेता, तो यह रस्म आर्य धर्म शास्त्रों के मुताबिक होती। एक मुसलमान मौलाना साहब से बातचीत करते समय हमने यही कहा तो वह हैरान रह गए और आश्चर्यचकित होकर कहने लगे ''हैं''! मांयें भी बनाई जा सकती हैं? हमने कहा – हॉ हिन्दुस्तान में यह दस्तूर है कि किसी बुजुर्ग औरत को माई कहकर पुत्रवत् फर्ज अदा करना। इसलिये हम उसे खुदीजा माई कहेंगे। वह अक्ल में, उमर में, तजुर्बे में, बीनिश (देखने) में अनुभवी कार्यों में ''माई खुदीजा'' ही है।
(दरअसल इस पिशाच पंथ की नीव ही संभोग पर रखी गई है, और यह पंथ दुनिया का एकमात्र अजूबा पंथ है जिसमें गिलमा (लौंडाबाजी), गुदा मैथून, जानवरों के साथ संभोग की अनुमति तो है ही, बल्कि खुद की अम्मी, आपा, बेटी, खाला, चाची, फूफी, गुलाम इत्यादि के साथ सोने की आजादी है और शरीयत के हिसाब से 12–13 वर्ष की बच्ची, यानी जब लड़की का मासिक श्राव शुरू हो जाता है, उससे निकाह करने की अनुमति है। पाकिस्तान में तो कब्र से निकाल कर उससे गैंग रेप किया गया था। पाकिस्तान और बांग्लादेश में वहां रहने वाले अल्पसंख्यक (गैर इस्लामिक धर्म) की लड़कियों को अगवा कर जबरन इस्लाम कबूल करवाया जाता है फिर शरीयत के नियम के अनुसार उससे निकाह पढ़वा लिया जाता है। और यही नहीं, उक्त पीड़िता को न तो उसके परिवार वालों से मिलने दिया जाता है, और परिवार के मर्दो एवं यार दोस्तों के साथ मिलकर उसका सामूहिक बलात्कार कर या तो मार दिया जाता है, या तो उसे वैश्यालयों में बेच दिया जाता है।)

बेटी आयशा

ख़दीजा का इन्तकाल हुए अभी तीन महीने भी न बीते थे कि मुहम्मद ने महसूस किया कि दुनियॉ में बीवी के समान प्यारी और कोई चीज़ नहीं है. मुसीबत बढ़ती ही जाती थी, घर में कोइ ढ़ांढस बंधाने वाला न था। बस, दूसरी बीवी की तलाश करने लगे। **''माई सूदा''** सुकरान की औरत थी। यह दोनों मियां बीवी मुसलमान हो चुके थे और इस जुर्म की इन्होंने सजा भी बड़ी कड़ी पाई थी। अरब

वासियों से तंग आकर इन्हें अपने देश को जिसका नाम ''मालूफ'' था, ख़रबाद (अलबिदा) कहना पड़ा और विदेश में रह कर गुज़र करते थे। जब मुहम्मद ने कुफ्फार (काफिर) से सुलह कर ली और उनकी मूर्तियों की कीर्ति[1] को मान लिया (अगरचे) बाद में फिर उसे इस सुलह से परेशानी हुई और इसने पहले इल्हाम को ''शैतानी बही'' कह कर मन्सूख कर दिया। तो दूसरे देश निकाले लोगों के साथ सुकरान और सूदा भी वापस आ गए. यहाँ आ कर सुकरान का इन्तकाल हो गया और सूदा बेवा हो गई, सूदा की वफादारी का सुबूत इससे ज्यादा और क्या हो सकता था कि उसने देश निकाले की तकलीफों को इस्लाम के लिये बर्दाश्त किया? इधर अपने पति की वफादार उधर अपने मजहब पर जान देने वाली!! इस प्रकार की अच्छी बीवी मिलना मुहम्मद के लिये मुश्किल था. रहमत पैगम्बरी के कारण उससे अपनी शादी कर ली. बूढ़े की बेवा स्त्री से शादी कुछ बेजा न थी दोनों एक दूसरे के प्यारे सनेक का हक़ अदा कर सकते थे। खुदीजा की जगह आखिर कौन ले सकता था? वह भी एक उम्मीद थी, जो पूरी हुई और घर सूना न रहा.

हम उपर कह आये हैं कि गृहस्थाश्रम के नियम के अनुसारमुहम्मद 25 वर्ष तक एक ही बीवी के साथ रहे और वह भी दो पतियों की विधवा! जे शादी के समय 40 वर्ष और मौत के समय 65 वर्ष की थी, इस बुढ़िया से इस जवान की निभ गई, यह बात मुहम्मद की पवित्रता की साक्षी है. सिनफ नाजुक से प्यार मुहब्बत की फितरत में था, यह दूसरे मर्दों को नेकी करने की नसीहत देता है, मुसीबत में मजबूर बना देता है, आफ़त में साबिर (संतोष) को बढ़ाता है, सीने को उभारता है और रूह का ''सकता'' करता रहता है इस वक्त भी बहुत से लोग हैं जो औरत के हुस्न की रंगीन तस्वीरें खींचते हैं. और पूजनीय दवी बना देते हैं, पवित्रता की मूर्तियां बना कर तसव्वुर की फिजा़ में उड़ते हैं, यह आलम ख़लील का इश्क इनके दिल दिमाग पर इफत व असमत (पाकदामन) का राज कनाये रखता है।

मुहम्मद ने शायराना तबीयत पायी थी. मगर खुदीजा के लिये कहना कि – ''शाली के बुढापे ने आलम मौजूदा जवानी में औरत के शबाब की बहार का लुत्फ़ न उठाने दिया'' यह कुव्वत तसव्वुर का एक और ताजयाना (सख्त) हुआ, दुनियां की औरतें दिमाग से उतर गई. बहिश्त की हूरों में खयाल आने लगे। बाद में जब मुहम्मद की मतादिद (सिलसिलेवार) शादियां हो गई, तब उसका दिल कसरते अज्दवाज़ (व्यभिचार) से खट्टा हो गया, चुनांचे बाद के इल्हाम में हूरों की खूबसूरती में वह मंज़रजेब नहीं हुए. जो खुदीजा के हीन हयात (जीवनकाल) में रह रह कर कुरान की आयतों में जलवागार होते रहते थे, सूरत बखा़न में मकजूर होते हैं. अर्थात – व्यक्त की गई सूरतों में यह बातें मौजूद हैं. इसी तरह कुंवारी औरतें (लड़कियॉ) गोरी बड़ी आंख वाली हैं, उभरे हुए सीने और भरे कासे की. सचमुच औरत की खूबी क्वारपन में है। और मुहम्मद ने क्वॉरी औरत से शादी की, वह **''आयशा''** थी. आयशा अबू बकर की लड़की थी, अबूबकर और मुहम्मद का बचपन

---

[1] इशादातुल्सारी शरह सहीह बुख़ारी जिल्द, 7 मुअल्लिमुल्तनजील। तफसीरूलजलालीन सफा 45 जिल्द 2, मुदाल्कुलतन्जील सफा 256, तफ़सीर कबीर – तफ़सीर कलबी।

का अदायल उमर (बचपन का स्नेही) था. उसकी उमर और मुहम्मद की उमर लगभग एक सी थी. सिर्फ दो साल का फर्क था, मुहम्मद अबूबकर से दो साल बड़ा था. अबू बकर बहुत जल्दी बिना किसी हीला हवाला (बहाने) के मुहम्मद पर ईमान लाया था और आयशा उसकी दिलबन्द थी. आयशा की उमर उस समय कोई 6–7 साल की थी.

"मुआजुलनब्बत सफा 28 रकूब 4"

मुहम्मद ने इस कम उमर की लड़की पर जो उमर में इसकी पोती के बराबर थी, अपनी निस्बत क्यों ठहराई? कितने ही लोगों का ख्याल है कि अबू बकर को रिश्तेदार बनाना था. प्रथम तो यह कि जब अबू बकर मूहम्मद के दीन पर ईमान ले आया और उसे खुदा का रसूल मान लिया, अर्थात् उसकी आज्ञा को खुदा की आज्ञा मान लिया तो इस प्रकार निजी ताल्लुक की जरूरत ही न रही थी लेकिन मान लो अगर यह ईमान का रिश्ता कमजोर दिखाई पड़ता था तो उसकी मजबूती का सबसे अच्छा ढंग यह होता कि मुहम्मद अबू बकर की लड़की को अपनी लड़की बना लेता और उसकी शादी अपने हाथ से करता, उसका दहेज देता और उसका बाप बन जाता. लेकिन अरब निवासी इस मनसुई तथा हकीकी रिश्तों से ज्यादा पायदार और खुशायन्दा रिश्तेदारियों के इमकान से, आशा (जानकार) न थे. "सैययद अमीर अली" लिखते हैं कि – अरब में कोई औरत बीवी के सिवाय किसी और रिश्ते से किसी मर्द के साथ न रह सकती थी. मुहम्मद अपनी सियासी जरूरियात से मजबूर था, कि लगातार शादियॉं करे। आह! प्यारे भारत!! पवित्रता के तारे भारत!!! प्रचीन आर्यों की प्राचीन सभ्यता के भारत!!! दुर्गादास, औरंगजेब की पोती सफीयदन्निसा को अपनी लड़की बताता है, तथा शिवाजी, गोलेवादी की असीर शहजादी जो गनीमत (लूट) के माल के साथ उसके साथ थी, जिसे शिवाजी अपनी बेटी समझते हैं.

इंदिरा गांधी द्वारा 82 के एशियाई खेलों में डाक टिकट जारी करके हिंदू मुस्लिम भाईचारे को स्थापित किया गया और मुल्ला पहलवान हिंदू को उठाकर के पटकता हुआ दिखाई दे रहा है
संदेश साफ था सरकार की मंशा का
और सरकार की दिशा का
लेकिन हम तो सिर्फ भाईचारा बताया गया।

परन्तु जरा इधर भी ध्यान दीजिये, आयशा नाजुक और हल्के बदन की थी, इसलिये पालकी उठाने में बोझ के अन्दाज से कोई पता न चला कि अन्दर आयशा है या नहीं? आयशा अब लाचार हो वहीं बैठी रही कि अब कोई लेने आते हैं, अब कोई लेने आते हैं. आखिर इसी इन्तजार में सवेरा हो गया और कोई भी न आया.

संयोग से साफवान अपना उँट लिये उधर आ निकला, आते ही उसने आयशा को पहचान यिा और बिना कुछ बातचीत किये आयशा के सामने उँट बैठा दिया, और आयशा भी उचक (उछल) कर सवार, अन्ततः एक रात एकान्त में गुजारने के बाद फिर अपने प्यारे मुहम्मद से जा मिली.

भला इस हालत में कौन किसको जुबान पकड़ता? तरह तरह के गन्दे आक्षेप लगाने लगे, धीरे–धीरे मुहम्मद भी आयशा से नाराज हो उठे. इस हालत में बिचारी आयशा और कोई उपाय न देख कर नैहर चली गई, आयशा की मॉ उसका दिल बहलाती रहती; मगर आयशा के दिल से गम की गॉठ दूर न होती और न ही खुलती.

इस परिवर्तन के कारण मुहम्मद के दोस्तों और दुश्मनों में तरह–तरह के मतभेद पैदा हो गए. मुहम्मद के नाम पर दाग लग गया, उसके रौब में भी फर्क आ गया, अन्त में अली और उस्मान की राय ली. अली ने कहा कि आयशा की दासी से इस घटना की सफाई ली जाए, सलाह नेक थी मगर अली के लिये यह राय बड़ी बुरी साबित हुई. आयशा इस गुस्ताखी को मरते दम तक न भूली, कि अली ने जो मुहम्मद का खुद दामाद है, इसकी इज्जत पर शक किया. अब अली से अरयशा की विकट शत्रुता हो गई. मुहम्मद की बेटी फातिमा, माई खुदीजा की प्यारी यादगार फातिमा, जो अली से ब्याही हुई थी, इधर फातिमा का पति उधर अपना दामाद ''अली'' है उधर चहेती बीवी आयशा है! मुहम्मद किधर जाये और क्या करे? आखिरकार घर में घरेलू लड़ाई की जड़ जम गई. इस घरेलू लड़ाई ने मुहम्मद की मौत के बाद इस्लाम की तवारीख को लगातार खून–खराबे की तवारीख (इतिहास) बना दिया. खिलाफत के लिये इस कदर खून खराबी न होती, अगर अली और आयशा का दिल साफ होता. हॉ अगर आयशा की अली से शत्रुता न होती तो!

बहुत बीवियॉ करने वालों देखो जब पैगम्बरों की जिन्दगी खतरे में है, और इस अजमत (बड़प्पन) के लोग भी अपनी गलतियों से, तथा इन बुरे कामों से नहीं बच सके, तो तुम कौन हो? अपनी करतूत के कड़वे फलों से अपने आपको सुरक्षित समझते हो. दशरथ का घर बरबाद हो गया, मुहम्मद का दीन बरबाद हो गया, क्यों? इसलिये कि बूढ़े होकर नवयुवतियों (कुमारियों) से शादियॉ की.

मुहम्मद आयशा के कमरे में गया और उसके मॉ–बाप के सामने सारी गुजरी हुई कहानी को सचमुच सुना देने की अर्ज की, तब मुहम्मद के सामने ही आयशा को उसके मॉ–बाप ने कहा कि – ''अगर तूने गुनाह किया है तो तू तौबा कर, अल्लाह बख्शने वाला है, रहम करने वाला है और अगर तू बेगुनाह है तो तू अपनी बेगुनाही का इजहार कर''. आयशा थोड़ी देर चुप रही. अन्त में बोली, ''सब्र ही मेरा जवाब है, परमात्मा मेरा मददगार है, मैं अगर अपने आप को बेगुनाह कहूँ तो कोई मानेगा नहीं, तौबा करूँ भी तो किस कसूर से? परमात्मा जानता है कि मैं बेगुनाह हूँ.''

मुहम्मद अपने दिल से आयशा का चाल–चलन जानता था. और उसका कायल था, लेकिन लोगों को भी तो कायल करना था. आखिर वह अपने आप को इल्हाम की सूरत में डाला और अपना मुँह कपड़े से ढ़ंक लिया तथा वह कुछ देर ज़ाहरा बेहोश पड़ा रहा, आखिर अपने माथे से पसीना पोंछता हुआ उठा और कहा –

"आयशा! खुशी मना!! अल्ला ने तेरी बेगुनाही की साक्षी दी है".

आयशा का खोया सौभाग्य फिर से मिल गया, लेकिन आक्षेप लगाने वालों पर शामत आ गई, इल्हाम पर इल्हाम होने लगे, आक्षेप लगाने वालों पर तरह–2 की बौछारें पड़ने लगीं, आखिर उनके लिये सजा मुकर्रर हुई कि उन्हें 80–80 कोड़े लगाए जायें. मर्दो के साथ–2 एक औरत पर भी यह कोड़े बरसाए गए.

"सूरह अन–नूर–4 (कुरान)" में रसूल और रसूल के खुदा का गम व क्रोध अब तक लिखा चला आता है. बदजुबान लोगों की जुबानें उनके मुँह में घुसेड़ दी गई, अब जरूरत इस बात की हुई कि हरम की फरमाईश की जावे,क्योंकि ताली दो हाथों से बजती है. वह खिदमत भी अल्लामियाँ ने कबूल की और तब "सूरये अखराब उतरी" कि–

"ऐ पैगम्बर की बीवियों! तुम और आरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परमात्मा से डरती हो तो अपने कौल (कथन) से न फिरो ताकि वह लालच न करे, जिसके दिल में मरज है, और कहा गया है, कौल और मारूफ अपने–अपने घरों में रूकी रहो और न दिखाती फिरो श्रिंगार जैसे जहालत के जमानें की औरतें करती थीं".

आखिर मुहम्मद को अपनी बीवियों को आप ताकीद करना, तथा तम्बीह देना बाकी जौजियात व लवाजमात के खिलाफ था. अल्लामियाँ स्त्री व पुरूष इन दोनों का बुजुर्ग है. उसको बीच में डाला और जो चाहा वह उससे इल्हाम के रूप में कहलवाया. इस तरह आयशा और मुहम्मद में पुनः एकता हो गई, और आयशा का घर भर में राज हो गया, परन्तु इसके बाद फिर किसी युद्ध में आयशा साथ न ले जाई गई.

इसके बाद आयशा के दर्शन आखिरी दर्शन हैं. जो इसके पति की मृत्युशैया पर हुए हैं. मुहम्मद ने अपने आखिरी मर्ज में जो मरजुल्मौत (मौत की बीमारी) साबित हुई, अपनी बीवियों से मंजूर करा लिया था कि अब मैं आयशा के ही घर में रहा करूँगा, और इसी मकान में आयतें उतरा करती थीं, वहीं खटिया थी, वही बिस्तर था, वही लिहाफ था. यह मकान मुहम्मद को सब मकानों से प्यारा था.

बीमारी के समय में मुहम्मद कब्रिस्तान को गया और अपने मरने का यकीन करके घर लौटा. आयशा भी ईत्तिफाक से सिर दर्द से दुखित थी, वह कराह कराह कर कह रही थी – मेरा सर! मेरा सर!!

मुहम्मद बोल उठे आयशा! यह शब्द मुझे कहने चाहिये थे. आयशा सुनते ही चुप हो गई. मुहम्मद को ज़राफत पर, तेरी हसरतों पर, तेरे हुस्न पर तथा तेरी सूरत पर रहम आता है, मेरी आँखों में वह आँसू हैं जो किसी बाप की आंखों से अपनी लड़की को विधवा होता हुआ देख करके बेअख्तियार निकल पड़े. मगर करूँ क्या? मैं तुझे अपनी लड़की कह कर सिसकता हूँ, जबकि मुहम्मद के लिये मेरा मन कुछ नहीं कहता.

सदा सुहागिनें

अबू बकर हजरत मुहम्मद साहब का दायाँ हाथ था, तो मौहम्मद उमर बायाँ. वह इतनी आसानी से मुसलमान न हुआ था, जैसे अबू बकर, मगर जब हुआ तो पूर्ण

विश्वास के साथ हुआ. अ बवह अपने मज़हब के लिये बराबर लड़ने मरने को तैयार रहता था.

अबू बकर दिलेर था, अकलमन्द था, इसके विरूद्ध मौहम्मद उमर जोशीला था, वह बहुत जल्दी गुस्से में आ जाता था, उस समय उसे अपने काबू में कर लेना सहज न था. यही मिजाज़ मौहम्मद उमर से उसकी लड़की **''हफ़्सा''** ने पाया था. वह भी किसी के रोके न रूकती थी, इसकी शादी ''खनीस'' से हुई थी, जो लड़ाई (गिजवाबदर) में मारा गया. 6–7 महीने त कवह विधवा रही और कोई मुसलमान उससे शादी करने के लिये तैयार न था, इसपर उमर ने पहले अबू बकर से निकाह करने को कहा, परन्तु उसके इन्कार करने पर फिर उस्मान से निकाह के लिये दरख्वास्त की, परन्तु इन दोनों ने ईन्कार कर दिया क्योंकि ''हफसा'' को संभालना कोई मजाक या खेल न था, इसपर उमर बहुत बिगड़ा और अन्त में मुहम्मद के पास हफसा के निकाह का प्रस्ताव लेकर आया. मुहम्मद ने अपनी मेहरबानी से उसे अपनी स्त्री बनाना मुजूर कर लिया. इस तरह जो रिश्ता मुहम्मद का अबू बकर से था, वही उमर से भी हो गया. दोनो बराबर वफादारी से इस्लाम का प्रचार करने लगे और अपनी लड़कियों की तोफैल मुहम्मद के मातहत बन गए. ऐसे ही गिजवाबदर के एक और शहीद अबीदा की बीवी **''जैनब''** थी, अबीदा रिश्ते में मुहम्मद का भाई था, उसकी बेवा औरत से भी मुहम्मद ने शादी कर ली. जैनब की बड़ी सखी (दिलावर) तबीयत पायी थी, इससे उसका नाम ''उम्मलमसाकीन'' पड़ गया.

अब अल्लमा इब्तिदाई (आरम्भिक) मुसलमानों में था. वह ''हबश'' की हिजरत में अरब से निकाल दिया गया था. जब मुहम्मद ने मदीना में डेरा डाल दिया तो वह वापिस आ गया, ''उहद'' की लड़ाई में वह घायल हो गया था. मगर बाद में अच्छा हो गया, जब ''बनियाद'' पर इस्लाम ने चढ़ाई की तो यह उसका सेनापति बनाया गया था,वहॉ वह पिछले घावों की कमजोरी के कारण फिर बीमार पड़ गया और उसकी मौत हो गई. मुहम्मद को अपने रिश्तेदारों से सहानुभूति थी, वह उसकी विधवा औरत **''हिन्द''** के पास जाया करता था. हिन्द तो बूढ़ी थी, मगर बहुत खूबसूरत थी. मुहम्मद ने उससे शादी करने का ईरादा जाहिर किया, उसने बुढ़ापे का बहाना किया, तब पैगम्बर ने फरमाया ''मैं भी तो बूढ़ा हूॅ''. बुढ़िया ने कहा कि बाल बच्चे हैं, मुहम्मद उनका भी वारिस बना और बुढ़िया को अपने घर ले आया. मदीना मस्जिद के साथ इस समय तक 5 कोठरियॉ पहले ही बन चुकी थीं[2], इनमें से हर एक में मुहम्मद की एक एक बीवी रहती थी. मुहम्मद बारी–2 एक एक रात, एक एक दिन एक एक बीवी के पास काट देता था. आखिरी कोठरो **''हारिष''** की थी. जब मुहम्मद की नयी बीवी आती थी, तो उसे हारिश की कोठरो में ठहराया जाता था और हारिश के लिये दूसरी नई कोठरी को तैयार कराया जाता था। वह बेचारा चुपके से अलहदा रहने का इन्तजाम कर लेता था. एक दफा मुहम्मद को खुद शर्म आई और कहने लगा कि आखिर हारिश भी क्या कहता होगा?

---

[2] तो क्या इसी लिये महिलाओं का मस्जिद में जाना वर्जित है? आपकी क्या राय है? ☺

रा0 आ0 सैयद अमीर अली फरमाते हैं कि यह सब विधवायें जिन्हें मुहम्मद की स्त्री होने का घमण्ड हुआ, ये सभी बेकस थीं, जिनके खाविन्द इस्लाम की सेवा करते–2 शहीद हो गये थे. मुहम्मद का यह फर्ज था कि उनके गुजारे का इन्तजाम करता, वह उसका कार्य जरूरी था परन्तु उसका अपना गुजारा पहले ही तंगी से चलता था, उसपर उसने अपनी रोजी पर और बोझ ले लिया तथा अपने खर्चे की जिम्मेदारी और भी बढ़ा ली, और आमदनी की सूरत वही रही. मुल्क मुल्क का रिवाज है, मुमकिन है सैयद अमीर अली का कयास सही हो. अरब में रसानते मुहम्मद के जमाने में कोई औरत मर्द के पास सिर्फ जोरू बन कर ही रह सकती हो, वरना हिन्दुस्तान की रसम तो यह है कि ऐसे धर्मात्मा लोग परायी औरतों को धर्म की बहिन बना लेते हैं, जिससे उनका गुजारा भी चल जाता है और दीन भी बरबाद नहीं होता, मुमकिन हैसारे मुसलमानों में कोई और विधवाओं का पालन करता न हो सकता हो, कोई कुंवारा या रंडुआ उनको अपनी स्त्री के रूप में ले जा सकता हो, और यह मेहरबानी का मौर (सेहरा) सिर्फ मुहम्मद के सिर बंधा हो, हमारी तुच्छ बुद्धि में अगर मुहम्मद उन्हें बहन बना लेता तो भी काम चल जाता, और अगर शादी जरूरी थी तो किसी कुँवारे से करा देता. अपना अपना मजहब है. हो सकता है कि मुहम्मद को यही तरीका पसन्द आया हो कि बीवियों से अपना घर भर ले, 60 वर्ष का बूढ़ा 5–5 बीवियाँ! खैर बीवियों से चहल पहल तो रहती ही होगी, मौज से रात–दिन कटते होंगे, सनफ् नाजुक के साथ बूढ़े का ताल्लुक दुरूस्त है।

बहुरिया

हम उपर कह चुके हैं कि जैद नाम का एक लड़का खुदीजा का ईसाई गुलाम था उसने मुहम्मद की मजहबी और दिली मुश्किलें दूर की थी, इसलिये मुहम्मद को उससे खास प्यार था, चूँकि खुदीजा ने उसे वह गुलाम दे डाला था और मुहम्मद ने उसे अपना मुतबन्ना (लड़का) बना लिया था. ज़ेद भी मुहम्मद से अधिक प्रेम करता था, एक बार जब उसका बाप उसे लेने आया तो उसने जाने से साफ इन्कार कर दिया क्योंकि मुहम्मद रसूल भी और बाप भी (दोनों) थे, इसलिये वह वहाँ अकेले वालिद (बाप) के पास जा कर क्या करता? उसकी पहली शादी ''उम्मेएन'' से हुई थी. इसकी उर्म ज़ेद से दुगुनी थी. लेकिन उसे खुद पसन्द करने वाले बाप (मुहम्मद) के हुक्म से लाचार होकर निकाह करना पड़ा. इस औरत से एक लड़का हुआ, जिसका नाम ''उसामा'' था, ज़ेद की दूसरी शादी **''जैनब''** से हुई, जैनब कुरैशी खानदान से थी और मुहम्मद की फुफेरी जाति बहन थी. एक दिन मुहम्मद ज़ेद के न होने पर उसके घर जा पहुँचा. चिक (परदे) की आड़ में जैनब बैठी थी, उसने रसूल (जो उसका ससुर भी था) की आवाज सुनी तो जल्दी से उन्हें भीतर लाने का प्रबन्ध करने लगी. मुहम्मद की निगाह उसके सुन्दर बदन पर पड़ी, बस फिर क्या था? दिल पर एक दम से बिजली सी गिर पड़ी और मुँह से निकला आह! सुभान अल्ला!! तू कैसी–2 खूबसूरती की कारीगरी करने वाला है? जैनब ने ये शब्द सुन लिये और दिल ही दिल में पैगम्बर के दिल में कब्जा पा जाने की खुशी मनाने लगी. ज़ेद से

शायद उसकी न बनती थी. वह लाख मुहम्मद का वारिस हो, भई आखिर था तो गुलाम ही!

जब ज़ैद घर पर आया तो उससे जैनबने इस माजरे का जिक्र किया. बस! फिर क्या था ! इसे आप मुहम्द की शादी की बातचीत (अकीदत) समझिये या शायद उसका दिल जैनब से पहले ही खट्टा हो गया हो, अतः वह दौड़ा दौड़ा मुहम्मद के पास गया और अपनी बीवी को –जिसपर मुहम्मद का दिल आ चुका था, तलाक देने को राजी हो गया. मुहम्मद ने रोक कर यह कहा कि आपस में खुशी से गुज़र करो, लेकिन ज़ैद ऐसी बीवी का पति बन कर नहीं रहना चाहता था, जो दूसरे को दिल दे चुकी हो, आखिर उसने जैनब को तलाक दे ही दिया, और जैनब मुहम्मद के पीछे पड़ी कि मुझे भी अपनी खिदमत में ले लीजिए. मुहम्मद को पेशोपेश से नाहक बदनामी होगी, आखिर ''वही'' (इल्हाम) ने सब काम तै कर दिया और सूरह उतरी –

''खुदा ने इन्सान को दो दिल नहीं दिये, न तुम्हारी गोद के लिये बेटे अपने बनवायें हैं. जो तुम कहते हो, यह तुम्हारे मुँह से निकला है. मगर अल्ला असली बात जानता है, वह रास्ता ठीक दिखाता ह तुम्हारे वारिसों को चाहिये कि वह अपने बाप के नाम से मशहूर हों और जब तूने एक ऐसे बन्दे से जिसपर अल्ला का भी फजल है, कहा कि तू अपनी बीवी अपने पास रख और अल्ला का खौफ कर और तूने अपनी छाती में छुपाया जो अल्ला की मरजी थी कि जाहिर हो और तू इन्सान से डर, हालांकि अल्ला ज्यादा काबिल है, डरो मत, जब ज़ैद ने तलाक की रस्म पूरी कर दी, तो हमने उससे (मोहम्मद से) ब्याह कर दिया, ताकि मोमिनों को इसके बाद अपने मुतबन्नों (माने हुए लड़कों) की बीवियों से शादी करना जुल्म न हो, बशर्ते कि तलाक की रस्म पूरी हो चुकी हो और अल्ला का हुक्म जरूर पूरा होगा''.

''सूरयेअखराब रकूब–5''

मौलाना कुतबुद्दीन शेख
@fatwa_man

ट्विटर का आविष्कार रसूल ने किया था, एक बार एक पक्षी मर गया था लेकिन रसूल ने उसे जिंदा करके उड़ा दिया और उसकी उड़ान से एक रुहानी ऊर्जा निकली जिससे एप बन गया| चूँकि वो पक्षी तीतर था इसलिए हमारे रसूल ने एप का नाम तीतर रखा लेकिन काफिर संघियों ने बाद तीतर का नाम बदलकर ट्विटर कर दिया

मुहम्मद तुममें से किसी का बाप नहीं है. वह अल्ला का रसूल है और ''खातिमुलमरसलीम'' है और अल्ला सब कुछ जानता है।

यह खब्द हमने इस लिये लिखे हैं ताकि मुहम्मद के दिल का पता (जानकारी) पाठक लगा सकें, जैनब की जियारत के बाद मुहम्मद ने झूठ–मूठ ताअम्मुल जाहिर किया वरना दिल में इश्क को आग भड़क गयी थी तथा जो हर समय भड़क रही थी "वही" (इल्हाम) होता गया. और मुहम्मद ने उसके बाद ज़ैनब के पास पैगाम भेजा कि –

"अल्ला ने तुझे मुझसे मिला दिया है. इसलिये अब निकाह की कोई जरूरत नहीं है."

जहॉ अल्लाह दिल मिला दे, वहॉ निकाह पढ़ाने वाले मौलवियों और काज़ियां का बीच में न पड़ना मजा़क नहीं तो और क्या है? सब लोगों को खुश करना जरूरी था तो कह दिया कि–

"अल्लाह ने निकाह पढ़ा है और जिब्रईल उसका गवाह है[3]. और इन दो शर्तों के अलावा और शर्त ही क्या है"?

"रंगीले रसूल" का यह रंग कहावत अजीब है, बेटा ! बेटा न रहा, बहू–बहू न रही.

अब पाठक समझ सकते हैं कि क्यों मुहम्मद को किसी औरत को मॉ या बेटी बनाने में झिझक थी? जब माने हुए लड़कों मुतबन्नों के साथ वह सलूक नहीं हो सकता जो हकीकी (पैदाईशी) औलाद के साथ होता है और उनकी बीवियॉ तक मुहम्मद के लिये हलाल हो सकती हैं, तो धर्म की बेटियॉ बहिनें क्यों कर बच सकती हैं? उस वक्त के मुसलमान तो खामोश नहीं हैं तवारीख (इतिहास) का फ़तवा यही है कि मुहम्मद ने बेजा़ किया. उसकी "वही" (इल्हाम) बेजा़! पैगम्बर मुल्जिम!! डसका इल्हाम मुल्जिम!!! अल्लामिया और उसका जिब्राईल मुल्जिम!!!

ऐसा नहीं है कि मुहम्मद अपने गुनाह न जानता था. बल्कि वह जानता था कि अगर उसकी बेहूदगीयाना नज़र ज़ैनब पर न पड़ती या जैनब ने ही अपने बदन को पूरी तरह छिपा लिया होता[4], तो दिन–दहाड़े यह अन्धेर न होता जो हुआ. अतः अब तो जो हो गया, सो हो गया. अब आगे देखो –

"ऐ मोमिनों !! रसूल के मकान में न जाओ, जब तुम्हें कुछ पूछना हो तो परदे की आड़ से पूछ लो यह तुम्हारे और उनके दिलों के लिये बेहतर होगा[5]. यह मुनासिब नहीं कि तुम रसूल के दिल को दूखाओ और न यह कि उनके बाद कभी भो उनकी बीवियों से शादी करो, रसूल की बीवियॉ मोमिनों की मायें हैं[6].

"सुरह अखराब रकूब–5"

इस इल्हाम का आखिरी जुमला मुझे बहुत भाया, मैं खुद उन्हें अपनी माता कहता हूँ. आगे चलकर फिर कहते हैं –

"ऐ रसूल! अपनी बीवियों और लड़कियों तथा मामिनों की बीवियों से कह दे, कि वह अपने उपर दामन का एक हिस्सा डाल लिया करें. फिर अपनी ऑख पर काबू

[3] तफसीर हुसैनी आयत मज़कर खूरा, जमकुर,

[4] शायद इसीलिये महिलाओं के लिये तिरपाल (हिजाब) से बदन ढ़ंक कर रखने की शुरूवात हुई ☺

[5] अब इस सूतियापे का क्या कहना? मेरी बीवी सिर्फ मेरी, और तुम्हारे घर की महिलाऐं .... ☺

[6] ये तो मोमिनों से बौंड भरवाना हो गया. वाह मेरे नबी ☺ ☺

रक्खें और अपनी हया की हिफाजत करें. तथा अपनी छाती पर परदा रक्खें और अपनी–अपनी लज्जा की हिफाजत करें. और कवायद (कानून) बनावें कि पड़ोसिनों के घर में किसी तरह दाखिल न हों जिससे उनके काम में बाधा पड़े''.[7]

''सुरह अखराब रकूब–6''

अगर यह कायदे कानून जैनब के घर जाने से पहले बनाये जाते तो जैनब का घर बच जाता और मुहम्मद के नाम पर दाग़ भी न आता. मगर क्या परदे ने मोमिनों को उनकी करतूतों से बचा लिया? बुरे काम के चाल चलन की सच्ची दवा दिल का साफ होना है. अगर मुहम्मद इसपर ज्यादा जोर देते तो शायद अपने दीन और दीन के मानने वालों को ज्यादा बेकसूर छोड़ जाते.[8] म्योर साहब का एक जिक्र किया है जो हज्ज के लिये मक्का गई थी और अरब के व्यवहार का आंखों देखा नक्शा इस प्रकार खींचती है–

''औरते अक्सर 10–10 शादियॉ कर लेती हैं. जिन्होंने दो–दो खाविन्द किये हैं उनकी तादाद बहुत कम है जो अपने पति को बूढ़ा होते देखती हैं या दूसरे से उसकी ऑख लड़ जाती है तो वह मक्के शरीफ की सेव में हाजिर होती हैं और मामला–फैसला करार अपने पहिले पति को छोड़ देती हैं और किसी दूसरे से जो जवान तथा खूबसूरत हो, उसके साथ प्रेम पैदा कर लेती है. यह हैं परदे की बरकात''.

हरम का सिंगार

मौजूदा जिल्द का मजमून रसूल का दस्तूर खानदानी (गृहस्थ विषय)है, इसलिये हमने किसी दूसरे मजमून को इसमें दाखिल होने नहीं दिया, मगर इसमें इत्तेशना होगी, क्योंकि अब जिन असमतमआब को मुहम्मदी सिर्फ जौजियत अदा करने लगे हैं, वह केवल यहूदिन है. मुहम्मद के इसरार (हठ) के बावजूद इसने अज्दवाज़ (व्यभिचार) से इन्कार किया. पाठकों के लिये इसका कारण समझना कठिन होगा. अगर उन्हें मुहम्मद और अहले यहूदियों के आपस में मेल–जोल का थोड़ा सा हाल सुना दिया जाये, तो अच्छा होगा, देखिये–

हिजरत के बाद मुहम्मद को यहूदियों से तरह–तरह मजहब की तारीफ की और अपने मजहब की हक्कानियत का सर्टिफिकेट भी उन्हीं से लिया, और बाद में जब उसके मददगारों की संख्या बढ़ गई तो वही यहूदी मुहम्मद की बुराई का कारण बने जो कॉटे की तरह दिल में खटकने लगे. एक दिन आया जब उनका मुसहारा (घेराव) हो जाना सफल हुआ तब उन्होंने माफी मांगी तो फैसला हुआ कि उन्हें कत्ल कर दिया जाये. सैकड़ों यहूदी जरा सी देर में तलवार के घाट उतार दिये गए. जिनमें एक औरत को भी उनके फैसले पर कत्ल कर दिया गया.

मेहरबानी का सलूक एक खूबसूरत औरत के साथ हुआ. जिसका नाम **''रेहाना''** था, उसे पहिले से ही सबके बीच से हटा दिया गया था, क्योंकि वह

---

[7] मेरा मानना है कि नबी दुनिया का पहला पौर्न स्टार था और उसकी ''जाहिलाना'' आयतें पोर्नबुक. ☺

[8] और इस तरह चुस्लाम में परस्त्री गमन, बहुविवाह, लौंडेबाजी की नीव प्यारे नबी ने रक्खी. ☺

सुन्दरता में बढ़ी चढ़ी थी, जो मुहम्मद के लिये रिजर्व थी. मुहम्मद ने उससे शादी की दरख्वास्त की मगर उसने नामन्जूर कर दिया. उससे कहा गया कि वह इस्लाम कबूल कर ले, परन्तु वह इसपर भी राजी न हुई. आखिर मुहम्मद ने उसे लौंडी (रखैल) बना लिया[9] और इसी हालत में वह कुछ दिन तक जीती रही मगर बहुत साल नहीं, आखिरकार वह अपनी कौम और अपनी खोई हुई आबरू के गम में घुल घुल कर मर गई.

बनीमुस्तलक पर युद्ध करने का जिक्र हम आयशा के पीछे रह जाने और तोहमता का निशाना बनने के समय कर चुके हैं. इस मुहिम में और मालोअस्बाब के साथ **''जोएरिया''** नामक एक यहूदिन और आई थी, उसकी बोली लगायी, तब मुहम्मद के पास हुक्म भेजा गया, मुहम्मद ने कीमत बढ़ाने के बजाये पहली कीमत देकर ही उसे अपनी बीवी बना लिया. ज्यों ही ''जाएरिया'' मुहम्मद के कमरे में गई, त्यों ही आयशा ने उसकी सुन्दरता देखकर ताड़ लिया कि यह औरत अब वापिस न जायेगी. यह खटका पैदा हुआ हो, या न हुआ हो, परन्तु वह समझ गई थी कि एक सौतिन और बढ़ने को है और यही हुआ भी.

खैबर भी यहूदियों की एक बस्ती थी, जिसपर मुहम्मद ने चढ़ाई की और उसे फतह कर लिया जिसमें उनका सरवर ''कनान'' भी मारा गया, बस उसकी बीवी हाथ आई, मुहम्मद ने उससे भी शादी का इरादा किया, वह राजी हो गई. अब मदीने जाने की ताव किसे? वहीं पर मिट्टी के ढेर बनाकर दस्तरखान बनाये गए और उनपर खजूरों, मक्खन, दही की दावत की गई. नई दुल्हन को संवारा गया और मुहम्मद उसे एक कोठरी में ले गये तथा मुहम्मद के विश्वासी लोगों ने उनके खेमे के आस–पास पहरा दिया कि कहीं बेदीन औरत अपने पति का बदला न चुका बैठे? मगर ऐसा नहीं हुआ. उस स्त्री के माथे पर जख्म का निशान था. जब मुहम्मद ने उस जख्म के बारे में पूछा तो उसने जवाह दिया कि मैने एक दफा रात को ख्वाब में अपनी गोद में गिरते हुए चॉद को देखा और इस ख्वाब का माजरा मैने अपने पति से कह दिया, पति को शक हो गया और कहने लगा कि –

''हरामजादी– पैगम्बर के साथ शादी करना चाहती है''.

बस! फिर क्या था उसने गुस्से में आकर जोर से मेरे माथे पर कोई लोहे की सीक दे मारी जिससे यह घाव पैदा हो गया. पाठक! कुछ समझे, जिसके दिल में पहले से ही मुहम्मद बसा हो, उसकी नेकचलनी के लिये क्या कहा जाये? मुहम्मद खैबर से मदीने वापिस आया तो वहॉ फिर मुहम्मद ने आबूसफियां की लड़की **''उस्महबीबी''** को अपनी स्त्री बनाया था.

सन् 626 ई में मुहम्मद ने काबा का हज किया. यह मुहम्मद का पहला हज था जिसकी आज्ञा काबा के पुजारियों ने मुहम्मद को दी थी. इस माके पर भी मुहम्मद ने अपनी करतूतों से हाथ न खींचा.

''मेमूता'' नामक उसके चचा अब्बास की विधवा स्त्री वहां मौजूद थी जिसकी उमर 26 वर्ष की थी, और वह रिश्ते में भी मुहम्मद के नजदीक की थी, इसी

---

[9] इससे साबित होता है कि रसूल के दो टॉगों के बीच काफी जगह थी. ☺

लिये अपने चचा के कहने सुनने पर मुहम्मद ने उसे भी अपने घर में रख लिया. मदीना की मस्जिद में जहाँ पहले नौ कोठरी थी, अब दसवीं भी तैयार हो गई.

यह तो मुहम्मद की मनकूह (ब्याहता) बीवियाँ थीं जिनको कुरान की रूह से मुहम्मद ने दाहिने हाथ से हासिल किया था, बाकी जो लौंडियाँ (रखैलें) थी, वह इन सब के अलावा थी.

मारिया

सन् 628 ई0 में मुहम्मद ने अपना गवर्नर लकोकस के पास भेजा, परन्तु उसने मुहम्मद के पैगम्बरी वाले सुलहनामे को नामुजूर कर दिया लेकिन मुहम्मद के प्रति वफादारी का रिश्ता कायम करने पर जरूर राजी हो गया, उसने दो लौंडिया भी मुहम्मद को भेजीं, उनमें से एक का नाम "मारिया"[10] था.

मारिया को मुहम्मद की अन्य बीवियों की तरह मस्जिद की कोठरी में जगह न मिली. क्योंकि यह लौंडी थी, उसके लिये अलग से एक बाग़ तैयार किया गया, जहाँ मुहम्मद कभी–2 जाते थे और उसके साथ समय बिताते थे. मारिया के बारे में मुहम्मद पर एक तोहमत लगायी जाती है कि लौंडियां रखना कुरान की रूह से जायज[11] है? मुहम्मद के घर में लोंडियां थी, उन पर न तो मुहम्मद की बीवियों ने एतराज किया और न ही मुहम्मद के पीरों (अनुयाईयों) ने.

एक दफा कहीं से तीन लौंडियां आई तो मुहम्मद ने 1–1 अपने ससुरों अबूबकर और उस्मान तथा एक अपने दामाद अली को बतौर भेंट कर दीं, आज की दुनियां उसे शर्मनाक ढ़िठाई ही कहेगी, कि अपने दामाद और ससुरों के साथ ऐसा मज़लिसी याराना बर्ताव? शाबाश मुहम्मद! ☺☺

हिन्दुस्तान में खुसर (ससुर) पिता के दरजे़ का होता है, और दामाद बेटे के दरजे़ का. इस प्रकार इज्जतदार बुजुर्गों और अजीजों को लौंडिया देना कोई भी भलामानस भला नहीं कहता, लेकिन उस जमाने में अरब के कुछ तोर–तरीके फरिश्ते की शहादत (गवाही) से एक चीज़ जायज कर दी तो कौन है गैर मु़स्लिम (काफ़िर) जो इस्लाम के पैगम्बर पर ऐतराज करे कि यह तो तुमने नाजायज काम किया.

[10] हदीस मुस्लिम तफसीर हुसैनी.
[11] सूरये निसां रकूब–3

गजब यह है कि अब मुसलमानों को भी मुहम्मद के इस तर्ज (अमल) का काम खटकने लगा है. सैयद अमीर अली इस बात को बगैर डकार लिये पी गए. आर मौलाना शिबली इसकी हालत ही बदल देते हैं, उनकी नजर में मुहम्मद के मकान मे यह बात हुई ही नहीं. कुरान में एक सूरह आइ है देखिये–

"या रसूल! त् क्यों अपनी बीवियों को खुश करने के लिये वह चीज़ अपने पर नाजायज़ समझता है, जो अल्लाह ने तुझपर जायज की– अल्लाह ने तुम्हारी कसमों को तोड़ने की मंजूरी दे दी है[12]. रसूल ने एक राज़ (भेद) अपनी बीवी को बताया था. उसने दूसरी बीवी से उस राज़ के एक हिस्से का जिक्र किया और दूसरा अपने दिल में रक्खा. इसपर अल्लाह ने पूछा कि आपको किसने बतलाया? तब उन्होंने जवाब दिया कि– रसूल ने! ङसके बाद अल्ला ने जो सर्वव्यापक है और सर्वगुण सम्पन्न है, कहा कि अगर तुम दोनों (बीवियां) तौबा करो– तो अच्छा, अन्यथा रसूल ने अगर तुम्हें तलाक दे दिया, तो उसका अल्लाह उसे तुम्हारी जगह पर तुमसे अच्छी बीवियॉ देगा जो अल्लाह की खातिरदारी करने वाली होंगी और ईमान लाने वाली होंगी तथा पाक करने वाली व विश्वास रखने वाली और पहले शादी हो चुकी है और वह भी जो कुॅवारी हैं.[13]

"सूरह तहरीम"

भाईयों क्या आप बतला सकते हैं कि यह भेद कौन सा था जो एक बीवी ने दूसरी पर जाहिर किया? मुहम्मद ने कौन सी जायज चीज अपने उपर नाजायज कर ली? गरीब बीवियों को अल्ला से झाड़ क्यों दिलवाई गई?

हदीसों में आया है[14] कि एक दिन जब मुहम्मद की हफसा से मिलने की बारी आई तो हफसा पहले ही छुट्टी लेकर नईहर चली गयी और उसके घर (कोठरी) में मुहम्मद ने "मारिया" से घर बसा लिया, इतने में "हफसा" आ गयी, वह मुहम्मद का यह मन्ज़र देख कर जल भुन गई कि उसकी आरामगाह एक अविवाहित स्त्री से भरी हुई है, हफसा के इस गुस्से को मुहम्मद तुरन्त ताड़ गया और कहा– भागवान! अगर मारिया के इस हाल का जिक्र तुम किसी से न करो, तो में यह प्रतिज्ञा करता हूॅ कि फिर आगे से मारिया के साथ कभी भी सोहबत न होगी, और मेरे बाद खिलाफत का हक़ तुम्हारे बाप का होगा.

पाठकों! बात थी, टल गई लेकिन हफसा को अपने पर काबू न रह सका. और उसने इस समाचार को आयशा की निगरानी में बीवियों की एक कौंसिल हुई जिसमें सबने मुहम्मद से मुंह फेर लेने का निर्णय लिया. मुहम्मद पैगम्बर! और उसपर भी मदीना का एकमात्र बादशाह? उसने कहा कि ये बीवियॉ कौन से खेत की मूली हैं, जो मुझसे रूखाई का बर्ताव करे? उसने फौरन वही (इल्हाम) वाले हथियार का प्रयोग किया और उसके आधार पर सब बींवियों का बायकॉट कर दिया और महीने

---

[12] क्या इसीलिये चुस्लिम "कसम खुदा की" कहने से गुरेज़ नहीं करते? अब तो समझो काफिरो.

[13] न सिर्फ प्यारे रसूल, बल्कि उनकी बीवियों से भी अल्ला का डाइरेक्ट कनेक्शन था, मोमिनो ने तो आजतक नहीं देखा.

[14] हदीस मुस्लिम तफसीर हुसैनी.

भर के लिये मारिया के यहॉ डेरा डाल दिया तथा उन बीवियों के वालिदों से कहा कि लो बिगाड़ लो, जो तुम लोग मेरा कुछ बिगाड़ सको. इसपर बहुत पेंचीदार हालत हो गई, उधर अबू बकर नाराज, उमर नाराज, उस्मान नाराज, कि एक लौंडो की खातिर हमारी बेटियों से ताल्लुक छोड़ दिया है. महीना भर की जुदाई के बाद मुहम्मद का भी दिल मुलायम हो गया[15] (जो हफसा के तेज तर्रार गुस्से से अच्छी तरह वाकिफ था) और कहने लगा कि अल्ला ने सिफारिश की है कि हफसा का कसूर माफ और उसके साथ उसकी सब बहिनों का कसूर माफ! खुदा खुदा करके रसूल के घर अमन हुआ और झगड़ा मिटा. "मारिया" से खास मुहब्बत होने का एक कारण यह भी था कि उसके पेट से बच्चा पैदा हो गया. मुहम्मद के लड़किया तो थीं, लेकिन लड़के होकर मर गए थे, मुहम्मद को वारिस मिला, शायद काम का भी वारिस, जायदाद का भी वारिस, मकदूजात का और बड़ी बात तो यह थी कि खानदान की आन–बान का भी वारिस. लड़का कौन नहीं चाहता? सैयद अमीर अली कहते हैं कि सम्भव है कि मुहम्मद ने बाज़ शादियॉ इसलिये की होंगी कि उसे औलाद करीना (अच्छी संतान) पाने की आरजू थी, वह आरजू भी किसी दूसरी बीवी को हासिल नहीं हुई, अगर हुई भी तो उस लौंडी (मारिया) के ही भाग में पड़ी. उसके उस नवजात पुत्र का नाम "इब्राहीम" रखा गया जिसे पालने के लिये बकरियों का एक रेवड़ तैनात किया गया.

एक दिन मुहम्मद इब्राहीम को आयशा (अपनी दूसरी बीवी) के पास ले गया और उससे कहा कि – देख मुहम्मद की निशानी है या नहीं? खदोखाल (सूरत शक्ल) में, रूप रंग में हूबहू मुहम्मद है. आयशा को सौतन के लड़के से नफ़रत थी. उसने कहा कि इसे किसी और की बराबरी दो, नाहक में अपनी सूरत की तौहीन मत करो,मुहम्मद न उसका मोटा–ताजा होने का इशारा किया, कि देख कैसा बलवान लड़का है? इसपर आयशा बोली– किसी को खुराक में बकरियों का रेवड़ दे दो तो वह भी फूल जायेगा.

हमने इस बात का जिक्र इसलिये किया है कि बहुत बीवी वालों को शिक्षा मिले. बाप ने औलाद की शक्ल देखकर आंखों से ठंढ़क पायी, दिल में खुशी मनाई और नज़र में रौशने के नूर का ज्ञान कर रहा है, और उधर बीवी है कि सौत की डाह से जली जाती है।

इब्राहिम की बदकिसमती कहिये कि वह भी थोड़े दिन जिन्दा रह कर मॉ–बाप को छोड़कर चल बसा, मुहम्मद की आंखें आंसुओं से डबडबा गई, नूर–पीरों, फकीरों ने अर्ज की कि आप तो हमें सब्र करने का पाठ पढ़ाते थे, और आज आपको क्या हुआ? तब हजरत ने फरमाया और पैगम्बरी शान से फरमाया कि आखिर मैं भी तो इन्सान हूँ, यहूदी आह जारी से मना करता हूँ, यह कौन कहता है कि जजबात (प्रेम) से दिल को खाली कर दो.

"मुहम्मद मुझ लेखक को तुमसे प्यार है और वह इसलिये है कि तू भी तो आखिर इंसान है, तुझे भी औलाद की आरजू है और बटे के मर जाने का गम है,

---

[15] आखिर एक ही तरह का गोश्त कब तक हजम होता? ☺

हॉ! अगर कुदरत के कानून के मुताबिक तू भी अमल करता और उस परमात्मा के नियम को न तोड़ता तो परमात्मा तेरी भी झोली रक्षा के मोतियों से भर देता.''

हम हैरान हैं कि आखिर इस कतबी लौंडी के माजरे पर लोग क्यों उंगली उठाते हैं? खुद मुसलमान इसे काले हाथ की तरह जेब में छुपाते हैं, हम तो कहते हैं कि– या तो लौंडी रखने की रस्म कुरान से मिटाओ अन्यथा जब यह नहीं हो सकता तो ''हफसा'' का गम और गुस्सा तथा उसका उपर कहा गया कथन बिल्कुल जायज है. क्योंकि मुहम्मद की काली करतूतों से उसकी शान व जौजियात में फर्क आ गया था, कि एक अदना सी लौंडी उसके कमरे में निवास करे? आयशा का गम व गुस्सा भी जायज था कि उसकी एक बहन की तौहीन हुई, उसकी जौजियात की तौहीन हुई,यही एक जौजियात उसका अपना था. उसका कौन सा हक जौजियात मारा गया. जैनब जब बगैर शादी के भी जायज पत्नी थी तो मारिया क्यों नहीं? अल्लाह ने उसका भी निकाह पढ़ दिया. जहॉ दा दिल मिल गए वहॉ अल्लाह ही काज़ी है और जिब्राईल गवाह है[16] इस बात का कि ''मारिया'' मुहम्मद की बीवी है.

बीवियों वाला हज़रत मुहम्मद

सभी हिन्दु लोग श्री कृष्ण को ''बॉसुरी वाला'' कहते हैं. बॉसुरी ही श्री कृष्ण की अज़मत (प्रशंसा) है. वृन्दावन के जंगल, गायों के गल्ले, ग्वालों के लड़के और लड़कियॉ, अयाना (अजीब) बॉसुरी लिये खड़े हैं, और जंगल की चारों दिशाऐं गूंज रही हैं, एक राग है कि जमीन और आसमान पर छाया हुआ है की ग्वाले मस्त, ग्वालिने मस्त, गायें मस्त, यहां तक कि जंगल के पेड़ पत्ते तक मस्त हैं. यह कृष्ण का बचपन है. जवानी आई, तो कंस को मारा, और जरासंध को मारा, वहां भी युद्ध की रणभेरी इसी बांसुरी ने फूंकी थी, परंतु जब श्री कृष्ण जी बूढ़े हुए तो जवानी की उमंगों की जगह बुढ़ापे ने ले ली. अब वही बांसुरी सभ्यता की जय में बिगड़ी को बनाती है भटके हुए (अर्जुन) को रास्ता बताती है. कुरूक्षेत्र के मैदान में और कौन बोल रहा था? यही बॉसुरी तो थी, जिसके शब्द ईश्वरीय शब्द कहलाये जो भगवत गीता के रूप में मौजूद है, इसी भगतद्गीता के मानी है, ''रहमानी नगमा'' यही आज का कृष्ण है, जिन्दा कृष्ण! ऑखों के आगे, कानों के पास मौजूद कृष्ण, आह!! श्जसकी अजमत का एक शब्द कहा और कृष्ण की सारी जिंदगी का नक्शा सामने आ गया, वह शब्द क्या है? वह है ''बॉसुरो वाला'' आह! क्या प्यारा नाम है?

अब आप गुरू गोविन्द सिंह जी को ही ले लीजिये, जो ''कलंगी वाला'' कहलाता है. बादशाह तो इनसे पहले के गुरू भी थे लेकिन कलंगी (ताज) सबसे पहले गुरू गोविन्द सिंह जी ने ही रखी थी. ऋषि दयानन्द का नाम पंजाब में ''वेदों वाले'' पड़ा है. ऋषि का काम– वेद, पैगाम–वेद, हयात (जीवन) और वफात (मौत) केवल वेद के प्रचार प्रसार का कारण थी. ऋषि का श्वांस–श्वांस वेदों का मंत्र था.

---

[16] यहीं से ''मियां–बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी फकड़े की बुनियाद पड़ी ☺

''वेदों वाला'' मन भावन नाम है, यह नाम लिया और उसके दिल को पा लिया अर्थात उसके रूह को पा लिया.

परन्तु मेरी समझ में नहीं आता है कि मैं अपने प्यारे मुहम्मद को ऐसा कौन सा नाम दूँ जिसमें मुहम्मद की जिन्दगी का पूरा फोटो आंख में उतर आए. मैने मुहम्मद की जीवनी शुरू से अंत तक पढ़ी, बड़े ही मज ले लेकर पढ़ी तथा बड़ी ही मुहब्बत से पढ़ी, हकीकत से पढ़ी और जानना चाहा कि आखिर वह ऐसा कौन सा धागा है जिसमें मुहम्मद की जिंदगी का फल पिरोया जा सके? जिसमें ख्यालात के नक्शे बन जायें तथा कर्म और वाणी जीती जागती तस्वीरें बन कर हाजिर हों.

हजरत की जिंदगी का पहला परदा उस समय उठता है, जब उसने माई खुदीजा के साथ शादी करने की ठानी. इससे पहले की कर्रवाही इस शादी की एकमात्र तैयारी थी, हजरत ने खुदीजा से शादी की और ''पैगम्बर'' बन गए.

मुहम्मद की पैगम्बरी को सबसे पहले किसने माना? सकी बीवी खुदीजा ने. पैगम्बरी में सबसे पहले उसकी पीठ किसने ठोकी? खुदीजा ने. मक्का की अदावत से उसकी रक्षा किसने की? खुदीजा के रसूख ने. 25 साल की उम्र से 50 साल तक मुहम्मद की जिन्दगी में अगर कोई कमाल ह, तो वह कमाल केवल खुदीजा का है. कहते हैं कि मुहम्म्द उस वक्त वाकई पैगम्बर था, अगर यह सच है तो वाकई में पैगम्बरी खुदीजा की ही देन थी.[17]

परन्तु जब खुदीजा मर गई, तो मुहम्मद ने मक्का से हिजरत की, और उसके बाद माई ''सूदा'' से शादी की, ''आयशा'' से शादी की, ''हफसा'' से शादी की. जैनब नं0 1 ''उर्फ सलमा (बेटे की बीवी)'' से, जैनब नं0 2 ''उर्फ हबीबी (दूसरे की बीवी) से, ''मैमना'' से, ''ज्वेरिया'' से, इन सबसे तो शादियां की और कवती लौंडी ''मारिया'' को यों ही (बिना शादी किये) अपने घर में रख लिया?

मुहम्मद 50 साल का था, जब खुदीजा की मौत हुई, तथा 62 साल का था जब वह खुद मर गया. इन 12 सालों के अरसे में उसने 10 औरतें की, यानी सवा साल में एक औरत! क्या हम मुहम्मद पर बहुत ब्याह करने का दोष मढ़ रहे हैं? हरगिज़ नहीं, जुबान जल जाय, अगर एक बात भी मुहम्म्द के हक में विश्वास के विरूद्ध कोई बात जुबान पर आ तो जाय. और गांधी ने उसे पवित्रता की सृष्टि कहा है. मुहम्मद पाक, उसका ख्याल पाक, तब परमात्मा की पवित्र सृष्टि पर उसकी दृष्टि न पड़ती तो और किस पर पड़ती?

हेनरी अष्टम जो इंगलिस्तान का बादशाह था, 6 शादियां को, और उनमें ही सारी उम्र खतम कर दी. मुहम्मद ने सिर्फ 12 साल में उससे कहीं ज्यादा शादियां की हैं. बस! मुहम्मद की जिंदगी हेनरी अष्टम की जिंदगी के निस्बत में कहीं ज्यादा रंगीन कही जा सकती है.

मिसाल के तौर पर किसी लड़ाई में हजरत को फतह हासिल हुई. तो माना गया कि परमात्मा की पवित्र सृष्टि की सुंदरता ऑखों के सामने आई है. बस! फिर क्या था? वहीं महफिल जम गई, और जड़ाई में जिनके इष्ट मित्र खो गए थे, वह

---

[17] दुख की बात है कि चुस्लाम में महिलाओं को फिर भी सम्मान प्राप्त नहीं है, उन्हें शैतान माना जाता है और मस्जिद में घुसने पर पाबन्दी है.

तो रो रहे हैं. यतीमों को बाप का गम, विधवाओं को पतियों का गम, परंतु क्या रंगीला रसूल मातम पुरसी दिखाता है? हरम् (जनानखाना) भी बढ़ाता है, आठों पहर दूल्हा बना हुआ है, दावतें उड़ रही हैं, दो खजूरें खाई और बीवी घर में रख ली, कई अभागिनी तो सुहागिनी बन गई.

हरत आयशा मुहम्मद की सबसे प्यारी बीवी फरमाती हैं कि मुहम्मद को तीन चीजें प्यारी थीं. प्रथम औरत, दूसरे इत्र आदि और तीसरे खाना. खाने पीने की तो कमी ही नही रही, रही इत्र आदि की बात! वह तो इच्छानुसार ही मिला, क्योंकि औरतें तो हजरत के लिये पसंदीदा खेल थी. इन हालातों में अगर मैं इस रंगीले रसूल को **''बीवियों वाला''** कह दूं, तो क्या वाजिब न होगा? बीवियों वाला कहा और मुहम्मद को पा लिया, मुहम्मद की रूह को पा लिया. उसकी असली रंगीली तस्वीर आंखों के सामने आकर खड़ी हो गई.

जैसे कृष्ण ''बांसुरी वाला'' है, गुरू गोविंद सिंह ''कलंगी वाले'' है, राम ''कमान वाला'' है, दयानन्द ''वेदों वाले'' हैं वैसे ही मुहम्मद ''बीवियों वाला'' है जो सब पैगम्बरों की शान है और मुहम्मद की शान उसकी बीवियॉ हैं, इसलिये – बोलो! ''बीवियों वाले की जय''.

मुहम्मद का तजुर्बा

मैं मुहम्मद पर क्यों फिदा होता हूँ? क्या इसलिये किउसने 12 बीबियॉ रखी थीं? नहीं–नहों, भाईयों मैं आप लोगों को आगाह कर देना चाहता हूँ कि बीबियों से घर भर लेना कोई बुजुर्गी नहीं है. हम पहले ही कह आये है कि यह थूक मुहम्मद के लिये कड़वा घूॅट था बल्कि मुहम्मद की बड़ाई उसमें है कि उसने इस कड़वे घूंट से दवाई का काम लिया. जया–2 तजुर्बा बढ़ा, त्यों–2 बहुत सी बातों का कायल होता गया. अर्थात अपनी गलती मानता गया. पहले तो मोमिनों की बीवियों पर संख्या की कोई शर्त न थी परंतु बाद में चार की आज्ञा दी.

''सूरये निसा–आयत 4''

इस पर भी यह शर्त लगाई कि ''अगर तुम उन्हीं में न्याय कर सको तो तभी इतनी बीवियॉ करना''. यही नहीं, बल्कि इसी सूरये में बल्कि इसी सांस में कहा है कि ''इन्साफ न कर सकोगे''. भाईयों, मैं यह कहना चाहता हूँ कि बहुत सी शादियों की रूकावट न थी तो और क्या था? खुद तो बुढ़ापे से मजबूर था? कि जिस्म के साथ कल्पनाश्सक्ति भी क्षीण हो गई थी परंतु जो आदत पड़ गई उसके लिये क्या किया जाये? उसे इस उम्र में बदलना बहुत मुश्किल था. हॉ अपने अनुयाइयों के लिये ''मन नकर्दम शुभा हुजूर वनकुदे'' (मैने तो परहेज नहीं किया, तुम करना) का मसला छोड़ गया, और अगर खुद पूर्व जन्मकी कारस्तानियों को याद कर दूसरा जन्म लेता, तो एक से अधिक स्त्रियां रखने से कानों पर हाथ रखता. क्या! मारिया का मामला उसे याद न था? जब सारी की सारी बीबियों ने साजिश करके बूढ़े की नाक में दम कर दिया था. खानाखराबी अलग, इज्जत की बरबादी अलग, फिर यह

भी खैरियत थी कि किसी स्त्री से लड़का पैदा न हुआ था वरना इब्राहिम का आयशा के सामने लाया जाना और उसका उसकी सूरत शक्ल देखकर नाक भों चढ़ाना! अक्लमंदों को इशारा ही काफी है, अली और आयशा में भी एक वाह (घृणा सूचक शब्द) जो मुहम्मद की छाती में रोजाना खटका करता था, उसे मालूम था कि मैं अपने दीन के अनुयाईयों को एक घुन लगा चुका हूँ जो उन्हें धीरे–2 बर्बाद कर देगा.

इस पर सवाल हो सकता है कि साफ शब्दों में अधिक बीवियां करने की रूकावट क्यों न कर दो? परन्तु हजरत की ऐसी साफगोई में अपनी मिसाल आड़े आ रही थी. स्वयं 12 बीवियां करने वाला दूसरों को शिक्षा दे कि तुम एक से ज्यादा न करो, कुछ हद से ज्यादा जुर्रत का काम था. उसने अपनी पैगम्बरी की फजीलत (बुजुर्गी) आम मुसलमानों से तिगुने की आज्ञा तो दी गई इससे ज्यादा की ''खातिमुलमर सलीन'' (आखिरी पैगम्बर) को आज्ञा देना उसकी खास शान भी तो नहीं हो सकती थी. मुहम्मद ने खुद के लिये जीतेजी हूरों का बन्दोबस्त कर अपने जीवन का लुत्फ उठाया और मोमिनों के लिये जन्नत में कम–से–कम 72 हूरों को दिलाने का झुनझुना थमा कर रूखसत हो गया. हम अपने मुसलमान भाइयों को सलाह देते हैं कि इस ''रंगीले रसूल'' की जिन्दगी से नसीहत हासिल करें और उनकी दोस्ताना शिक्षा पर, उनके शब्दों पर और उल्टे–सीधे स्वप्नफल (इल्हाम) पर अमल न करें.

मुझे मोहम्मद पर क्यों यकीन है क्या इसलिए कि उसने अपने हमजिंसो (अनुयाईयों) को औरतों के तलाक की इजाजत दी है और मैं उनका हमजिन्स हूं! नहीं! नहीं!! बल्कि तलाक की इजाजत से तो शादी एक आरजी (बनावटी) रिश्ता रह जाता है और गृहस्थी का प्रबंध स्थाई रूप से नहीं होता. बेगम साहिबा भोपाल का तजुर्बा जो उन्हें अरब के हज करने के दौरान अरब की औरतों के बारे में हुआ है वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब शादी बच्चों का खेल हो तो उसमें गंभीरता आ ही नहीं सकती यह कारण है की बेग़म साहिबा को अरब में बहुत कम ऐसी औरतें मिली जिन्होंने 2 से कम पति किए हो बल्कि इसके

विरुद्ध 10–10 पतियों की घरवाली भी देखने में आई. जब एक जाति (विशेष) को तलाक की खुली छूट दे दी जावे और दूसरी को पतिव्रता रहने का पाबंद किया जाए तो वह दूसरी पतिव्रता भी अपनी मुखालिसा (प्रोलाप) का बहाना निकाल ही लेगी.

हमें देखना है कि मोहम्मद इस बारे में क्या कहता है? कुरान में पहला जिक्र औरत का वहां आता है जहां उसे मंजूरी देने की ताकीद की गई है.

''सूरयेनिसा''

पैसे देकर सतीत्व खरीदने में पाप नहीं समझा. अतएव जबरदस्ती से कुछ अच्छी ही सूरत है. सतीत्व की कीमत लगाई है, यही सही रसूल के जिन्स अनास (प्रिय वस्तु) पर अगणित रहमत ह. यह हुई रहमत नंबर एक. इसी को अरबी जुबान में ''मतअ'' कहा गया है. ईरान में अब तक इस का रिवाज है लेकिन ईरानियों का गुनाह मोहम्मद के मत्थे नहीं मढ़ा जा सकता क्योंकि ईरानियों ने तो एक आयत पढ़ी और बस वही गुलमोहम्मद हो गए.

मोहम्मद ने आगे तरक्की की, शादी को, और आरजी (बनावटी) क्षणिक रिश्ते से ज्यादा समय वाला बनाया यहां तक कि तलाक पर संख्या लगा दो ताकि कोई मियां अगर अपनी बीवी से रूठ गया हो और उसका दिल तलाक के बाद भी दोबारा उसी के तरफ चला जाए तो कहीं कमान से निकले हुए तीर का उदाहरण ना हो जाए, इसलिए साफ कह दिया कि पहले तीन तलाक में हर एक के बाद तीन तीन माह तक बगैर शादी किए रहना चाहिए परंतु यह कानून सिर्फ औरतों के लिए है, मर्दो के लिए नहीं और अगर वह दो भी कर लेगा तो भी कुरान की हद नहीं रहेगा, एक आयत की ना सही तो दूसरी आयत की सही. क्या खरा मजाक है?

यही नहीं फिर ''हलाला'' की पाबंदी लगाई है कि अगर कोई नटखट शौहर ऐसा ही हो कि बार-बार तलाक देता जाए तो उसे तीसरी बार यह काम करते हुए कुछ झिझक हो, अतः कानून बना दिया कि तीसरे तलाक के बाद बीवी अपने खाबिन्द से उस समय ब्याही जाए जब उसकी निस्बत (प्रेम संबंध) दूसरे से हो जाए, यही नहीं एक साथ बसंग (एक बिस्तर पर रात गुजार ले) भी कर लेवे.

''सूरये बकर रकूअ 29''

लोग कहेंगे कि यह रस्म तो लज्जाहीन है ''सैयद अमीर अली'' लिखते हैं कि अरब की शर्म (लाज) को उकसावा देने के लिए है. रसूल का मतलब यह था कि 2 से ज्यादा तलाक किसी औरत को ना मिले.

''हलाला'' अमल में लाया जाएगा यह कयास तो रसूल को कभी हुआ ही नहीं. हमें सही बात मानने में कुछ उज्र नहीं कि हम नाहक में अपने मुसलमान भाइयों को हलाला जैसे लज्जाजनक परंपरा का पाबंद नहीं देखना चाहते. यद्यपि हमारी समझ में इस बुरी रस्म के अदा किए जाने की कुछ मिसाले मौजूद हैं. गलती कानून बनाने में हुई है, मोहम्मद की नियत का इसमें कुछ भी कसूर नहीं है.

''सैयद अमीर अली'' लिखते हैं कि इस आयत के आगे फिर एक और आयत निकाह के अध्याय में ही आई है. इससे ''हलाला'' के हुक्म को रद्द करना ही समझना चाहिए, यह रवायत ऑनरेबल की अकेली राय है. लेकिन हमारी सर आंखों पर ! हम तो सारे कुरान को एक तरफ से मन्सूख (रद्द) करने को तैयार हैं उनके अपने कुरानी भाई उनकी सलाह मान लें तो ''हलाला'' से छुट्टी हो भी जाए तो भी तलाक की बला से तो सिर पर ही सवार रही, ज्यादा देर ना सही, दो ही दफा सही. वह अलबत्ता कुछ बुराइयों का कारण है. हजरत ने खुद जनब (अपनी पुत्रवधू अर्थात अपने बेटे जद की बोवी) को तलाक दिलवाया था. कह कर ना सही, इशारों से ही सही, जिसका कुरान ने सारा भेद खोल दिया कि उस समय हजरत के दिल पर कुछ और ही कैफियत गुजर रही थी. जुबान के बयान से वह कैफियत बाहर थी. हजरत दिल ही दिल में अपनी इस हरकत से पछताए कि पर्दे की पाबंदियां सब इस बात की गवाह है कि हजरत को अपनी और जैनब की बेबाक नजर शाक़ (असह्य) थी. वही बेबाक नजर ही तो तलाक का कारण बनी थी. हजरत और अपनी बीवियों से भी तो नाराज हुए थे जिसके कारण महीने भर तक उन्हें अपने हिज (जुदाई) में और अपने को उनके हिज में तड़पाया था. उस समय तलाक क्यों नहीं दिया ? बल्कि उल्टा उन सभी बीवियां पर बहुत बिगड़े और अल्लामियां की मारफत चिट्ठी पत्री यानी संदेश भेजे और तलाक की धमकी भी दी

लेकिन तलाक नहीं दिया, रवायत इस प्रकार है कि – "जब स्‌दा बूढ़ी हो गई तो हजरत उसे तलाक देने को तैयार हो गए लेकिन स्‌दा ने अपना नंबर आयशा के लिए बदल दिया, और अल्लामियां की सिफारिश से मोहम्मद तलाक की गुनाह से और स्‌दा बेकसाना बारी के अजा़ब से बच गई".

" मुस्लिम जिल्द रकूब"

असल में मोहम्मद तलाक को बुरा मानते थे. अजी एक हदीस मौजूद है और हम तो कुरान को भी हदीस ही समझते हैं क्योंकि अल्लामियां को कोई चीज ऐसी नाखुश नहीं करती जैसी अपनी घरवाली को तलाक देना. अर्थात कोई ऐसे खुश नहीं करती जैसे गुलाम को आजाद करना.

"इब्नमाजा आवावाकुल निकाह"

हजरत ने मरते दम तक खुदा को खुश रखा, हजरत ने जी भरकर बीवियां की और उनमें से एक भी तलाक नहीं दिया. वाह! आले मुहम्मद! उम्मत (धर्मानुयायी) मोहम्मद! मोहम्मद की अक्ल पर पास (निरीक्षण) करो. तलाक नाजायज! तलाक नाजायज!! तलाक बिल्कुल नाजायज!!!

नोट :– अब आप हजरत मोहम्मद साहब के बारे में विशेष जानकारी व उनके रंगेले जीवन विशेष अनुभवों का अवलोकन भी करें!

धन्यवाद!!

कौसे कजा़ (इंद्रधनुष)

पाठक! तूने रंगीले रसूल की जिंदगी के कई रंग मुलाहिजा किए. क्या कोई रंग तुझ पर भी चढ़ा? मोहम्मद तजुर्बेकार पैगंबर था, उसके तजुर्बे का फायदा उठा. देख रंगीले का रंग एक नहीं बल्कि पूरा कौसे कजा़ (इंद्रधनुष) है. इसमें सातों रंग मौजूद हैं.

1. 25 वर्ष तक ब्रम्हचर्य का पालन करिए, जैसे मोहम्मद ने अपनी जिंदगी के 25 वर्ष ब्रह्मचारी पूर्वक गुजारे, मगर हांकतभी दिल में काली रात के शुगल (कामवासना संबंधी मनोरंजन) का ज्ञान ध्यान ना लाना.

2. अपने जीवन में भूलकर भी 40 वर्ष की बुढ़िया से शादी ना करियो, बल्कि अगर किसी बुजुर्ग स्त्री को गोद में लेटना ही हो व अपने (यतीमी) अनाथपन का गम मिटाना ही हो तो उसे मां बना लीजियो परंतु का बीवी कदापि नहीं.

3. किसी खेलती गुड़िया से शादी न करिए नहीं तो गुड़िया खेलती होगी और अगर पीछे (विधवा के रूप में) रही तो सिर्फ को रोएगी, हां! अगरचे उस पर दिल आ ही जावे तो उसे अपनी लड़की बना लीजिए.

> @brandfatwaman
>
> कर्ण ही अल्लाह थे उनके पास तमाम ताकत होने के बावजुद केवल पहिया पंचर होने से उनकी मौत हुई, उन्हें पंचर बनाना आता नही था तब उन्हे मालुम हुआ कि पंचर बनाना बहुत जरूरी है इसलिए उन्होंने दीनी कौम को फरमान दिया कि जिंदगी मे पंचर बनाना जरूर सीखो इसलिए हमारी कौम पंचर में एक्सपर्ट होती है

4. बहू को अपने लड़के की बीवी हो या गोद लिए हुए (म,तन्नने) की बहू हो उसे अपनी लड़की ही समझियो नहीं तो नाहक में ही चिकें (परदे) डलवाता फिरगा तथा दुनिया भर में हुस्न पर पर्दे और पहरे लगवाता फिरेगा.

5. लौंडी जायज नहीं होती उसकी औलाद को बीवियां तस्लीम (स्वीकार) नहीं करती, उसके सुहाग से भी जलती है और दूसरे की इशरत (भोग विलास) में दखल देती है.

6. बीवी एक से ज्यादा अजाब् (झगड़ा), घर का अजाब, बाहर का अजाब, रूह का अजाब, न खिलवत (तनहाई) में चैन, ना जलवत (महफिल) में चैन, जो आपस में लड़े तो आफत. जो एका (संगठन) करें तो कयामत.

7. जैसे अपनी बेवा को दूसरों की मां कहता है. नहीं बल्कि अल्लामियां से कहलवाता है. ऐसे ही दूसरे की विधवाओं को भी अपनी माऐं समझिए यह "वही" है, अर्थात या अल्लामियां का हुक्म है. अच्छा हजरत – रुखसत (आज्ञा) रसालत (पैगंबरो) के नाटक का यह अद्भुत दृश्य खत्म हुआ फिर कभी किसी दूसरे दृश्य को लेकर हाजिर होंगे, अच्छा! खुदा हाफिज!!

!!इति!!

नोट :– पाठक अभी तूने अपने प्यारे रसूल के अमूल्य अनुभवों का लाभ उठाया अब आगे अपने प्यारे, रंगीले, छबीले और रसीले रसूल की रंगीली बातों से भी तो लाभ उठा ताकि तेरा यह मनुष्य जीवन सफल हो सके.

----------------------00--------------------------

रंगील रसूल की कुछ रंगीली बातें

1. एक बार हजरत से एक शख्स ने पूछा – या रसूल अल्ला! मैं औरतों का बड़ा हरीस (भूखा) हूं, इसलिए उन्हें औंधा (उल्टा) डालकर भी जमाअ (संभोग) करता हूं इसमें आप क्या फरमाते हैं? इसी सवाल के वास्ते हजरत के द्वारा तभी एक आयत नाजिल हुई की – "औरतें तुम्हारी खेतिया हैं, उन पर जिधर से चाहा उधर से जमाअ (संभोग) करो" हजरत ने यह भी फरमाया कि "अपनी ओर से चित्त्त–पट अर्थात किसी भी स्थिति में जमाअ (संभोग) करना दुरुस्त है"

"दरमन्सूर जिल्दअव्वल मतबुआमिसर सफा 262"

2. एक औरत ने हजरत से पूछा कि– हुजूर! हमारा शहर हमसे चित्त्त–पट दोनों तरफ से जमाअ करता है, क्या यह वाजिब है? तब हजरत ने फरमाया कि – "क्या हज है अगर सुराख वाहद (एक) हो?"

3. एक व्यक्ति ने हुजूर से पूछा कि हाथ से काम अर्थात हस्तमैथुन करने पर क्या रोजे को ज़लक नहीं लगता अर्थात् रोजा नहीं टूटता? तब हजरत ने फरमाया कि – गैरइन्जाल (वीर्य न निकलने की स्थिति) में जायज है''. आगे फिर इसी सवाल के जवाब में हजरत ने यह भी कहा है कि – ''सोहबत तेज करने के हिसाब से तो जायज नहीं. हां अगर तस्कीन सोहबत (संभोग की तसल्ली की गरज से किया जाए तो जलक लगाने वाला (हस्तमैथुन करने वाला) गुनाहगार ना होगा. तथा जब किसी चौपाये वामियत से जमाअ किया जाए तो खलास ना हो तो उस स्थिति में रोजा फासिद (खराब) नहीं होता''.[18]

''दरमन्सूर सफा 262 फातावी–
काज़ीखॉं जिल्दअव्वल–
किताबुलसोम–
फस्लखामिस''

4. एक रोज हजरत की खिदमत में सफबान बिनमुअत्तल की जीजी उस वक्त हाजिर हुई जब हजरत रजीउल्लाह भी वहां हाजिर थे, तब उनकी बीवी ने पूछा – या रसूल अल्ला! जब मैं नमाज पढ़ती हूं तो मुझे जमाअ (संभोग) न कराने पर नमाज नहीं पढ़ने देता, मारता है. जब रोजा रखती हूं तो जमाअ करके अफ्तार (खंडित) कर देता है, रोजाना सुबह तक मशगूल जमाअ (संभोग में व्यस्त) रहता है. इस वाकया को सुनकर हजरत ने फरमाया कि– ''कोई औरत बिना इजाजत शौहर के रोजा नमाज ना रखें''.[19]

''तलवीसुलशाहाह जिल्दशाह–4 सफा– 48''

5. एक व्यक्ति ने हजरत मोहम्मद से अर्ज किया कि हुजूर अगर मर्द केवल गैरइंजाल (बिना वीर्यपात हुए) के कारण औरत से जुदा हो जाए तो क्या करे? इस पर आप ने फरमाया कि – ''सिर्फ जाकर धो डाले और वजू (हाथ धोकर) करके नमाज पढ़ ले''!

[18] इसका मतलब हस्तमैथून के अलावे ''गुदा मैथून'' और चौपाये जानवर के साथ भी ''अप्राकृतिक मैथून'' की इजाज़त इस्लाम में है.
[19] शायद इसीलिये सभी मोमिन ''ठरकी'' होते हैं और मुहम्मद की ठरक को अपना ईमान समझते हैं.

पाठक! अब तो तूने एक महान अनुभवी पैगंबर के महान अनुभव भी प्राप्त कर लिए इसलिए अब तो कम से कम तहेदिल से एक बार जोर से कह दे कि –

"महान अनुभवी पैगंबर की जय"!!

!! समाप्त !!

नोट :

इस पुस्तक में जिन जिन पुस्तकों के हवाले दिए गए हैं उन सब को केवल "सुन्नी मुसलमान" ही प्रमाणित मानते हैं.

मोहम्मद रफी

विशेष सूचना :–

जल्द ही कुछ आधुनिक लेखकों के अनुसंधान पर आधारित पुस्तकों का निचोड़ प्रिय काफ़िरों के समक्ष रखने की ओर कार्य अग्रसर है. बन्धुओं से अनुरोध है कि इस पुस्तक को अपना पूरा प्यार और समर्थन दे कर अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाकर समाज को लाभान्वित करने का कष्ट करेंगे और उी प्रकार से "रंगीला रसूल–2" को भी वही अपनापन और प्यार देंगे.

धन्यवाद